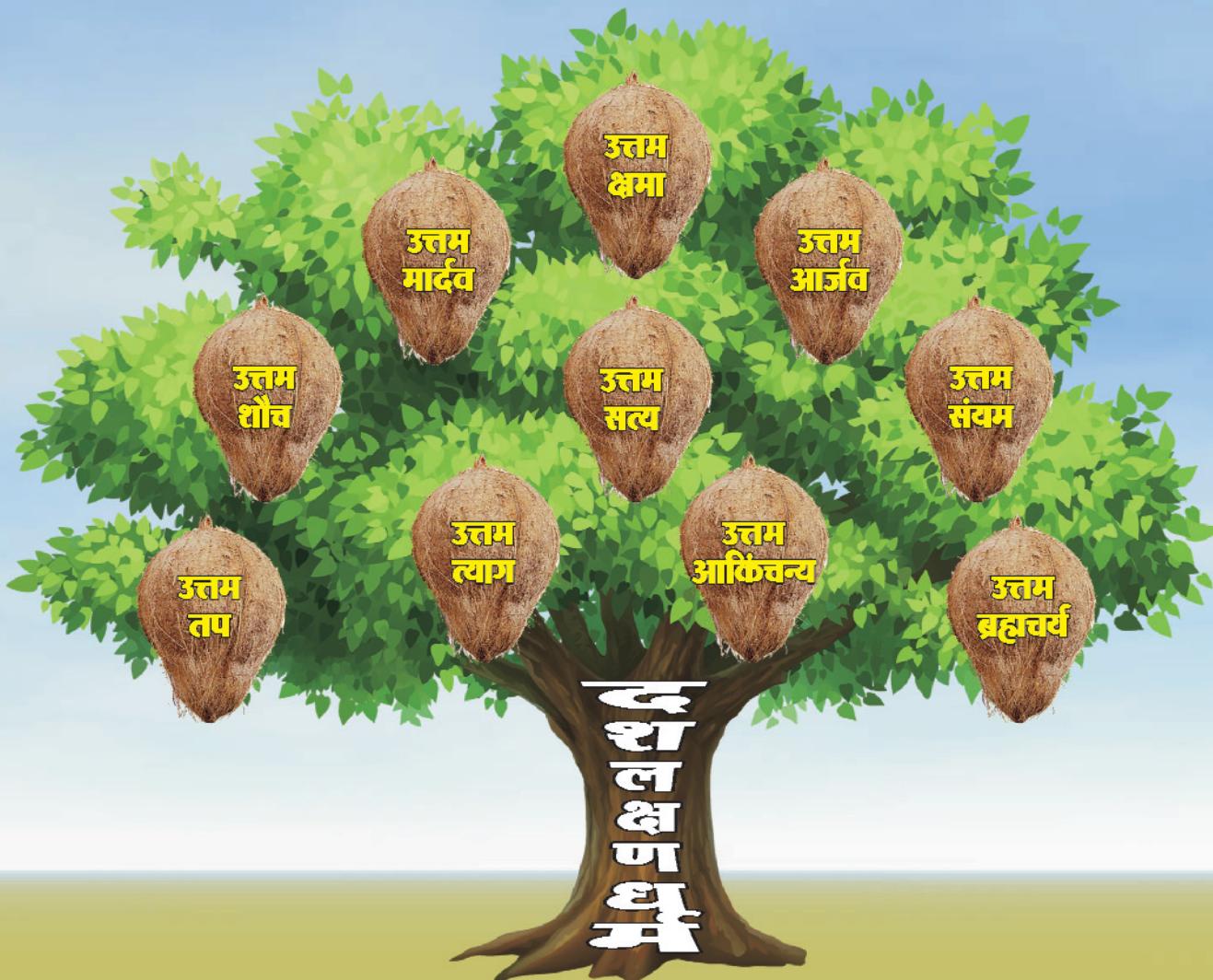


गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 14 » अंक : 54 » अप्रैल-जून 2019 » मूल्य : 15 रु.



सादर
आमंत्रण

अखिल भारतीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा आयोजित
दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन

दि. 12-13 अक्टूबर 2019

स्थान : श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरिजी (म.प्र.)

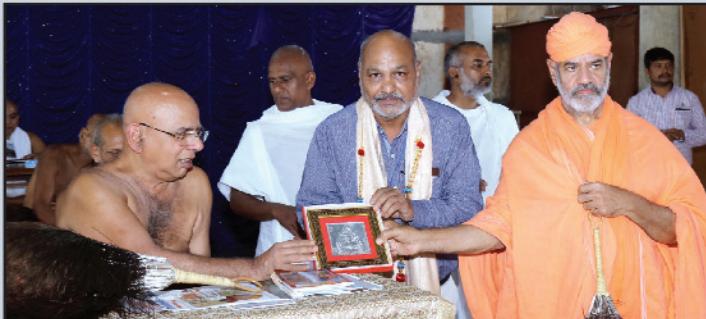


अवश्य पढ़ारे...



प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा, सागर (म.प्र.)

यादों के झरोखे से



गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 14 ■ अंक : 54 ■ अप्रैल-जून 2019 ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

१ संस्थापक सम्पादक १

स्व. पं. मुन्नालालजी रांधेलीय व्यायतीर्थ

(1893-1993, सागर)

१ परामर्श प्रमुख १

डॉ. शीतलचंदजी जैन
जयपुर (मो. 09414783707)

१ मार्गदर्शक १

डॉ. नेमिचंदजी जैन
खुरई (मो. 09406538295)

१ प्रबंध सम्पादक १

सुरेश जैन मारौरा श्रीयांशु जैन
इंदौर सागर
(मो. 8878102700) (मो. 9827006337)



१ प्रधान सम्पादक (मानद) १

राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सनावद
(मो. 9407492577, 9826299568)
ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com



१ सह सम्पादक (मानद) १

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया
कटनी
(मो. 9827279009)

ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com

१ प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय १

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पञ्चलाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.), फोन : 07582-243101

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

■ शिरोमणि संरक्षक :	1,00,000.00
■ परम संरक्षक :	51,000.00
■ विशिष्ट संरक्षक :	31,001.00
■ गौरव संरक्षक :	21,000.00
■ संरक्षक :	11,000.00
■ विशिष्ट सदस्य :	5,101.00
■ सहयोगी सदस्य :	2101.00
■ आजीवन सदस्य :	501.00
■ वार्षिक सदस्य :	240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तालिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111, ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें। (पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। -संपादक

प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा, प्रधान कार्यालय : तीर्थकर परिसर, नमक मंडी, कटरा बाजार, सागर के लिए अरिहंत ऑफसेट, सागर से मुद्रित। लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)



लक्षण के साथ जीना सिखाता है 'दशलक्षण पर्व'

पत के गुण पालने में दिखाई देते हैं, 'जैसी मति वैसी गति', 'नाच न जाने ऑगन टेढ़ा', 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत', ऊँची दुकान फीके पकवान', धन नहीं धर्म महत्वपूर्ण है। धर्म, धंधा करने की नहीं धारण करने के लिए होता है। हमें संतो के चरण नहीं आचरण पकड़ना चाहिये। जीवन है, पानी की बूंद, कब मिट जाये रे, क्षमा वीरस्य भूषणम्, हमें अतिक्रमण नहीं प्रतिक्रमण करना चाहिये।

ऐसी अनेक कहावतें, लोकोक्ति और सद्वाक्य सुनते-सुनते हमें अनेक वर्ष बीत गए लेकिन परिवर्तन नहीं है, लक्षण के साथ जीना नहीं आया, ऐसा लगता है इस जीवन में परिवर्तन आने की सम्भावना भी नहीं है। लक्षण के साथ जीना भी नहीं आया क्योंकि लक्षण क्या है वह हम जानते नहीं है। हम दूसरों के लक्षण तो जानते हैं कि फलां ऐसा है, वैसा है, क्रोधी है, मानी है, लोभी है, मायाचारी है, लेकिन मैं इन सब में क्या हूँ इसे हम नहीं जान पाते हैं।

दशलक्षण में आर्मित्रित विद्वान अच्छे हैं, महाराजजी, माताजी, दीदी-भैयाजी अच्छे, बहुत अच्छे या सामान्य है, इसका निर्धारण हम करते हैं, हम यानि जनता जो स्वयं का निर्धारण नहीं कर पाती है, जो स्वयं समझदार नहीं है, ऐसा ही है जैसे पी.एच.डी. वालों की कॉपी वह जाँच रहा है जो स्वयं अभी उस मामले में पॉचर्वीं फेल की योग्यता रखता है। जब इस तरह की घटनाएँ देखने को मिलती हैं तो हमें लगता है कि आखिर हो क्या रहा है हमारा हर पर्व, त्यौहार जो स्वयं को जानने के लिए है, जो निजता की पहचान कराने वाला है, हमारी हर स्तुति, पूजा, भक्ति, आराधना, मण्डल विधान पूजा, भजन, समाधिमरण पाठ आदि सब किसलिए हैं, सबकी रचना का आधार यदि कोई है तो वह स्वयं की पहचान करने के लिए है। लेकिन आज सब दूसरों के लिए हो रहा है, स्वयं की दृष्टि गायब हो रही है, प्रत्येक आयोजन को करने के पीछे मूल भावना दूसरों को दिखाने के लिए या लोग क्या कहेंगे की भावना है।

सारा खेल बिगड़ रहा है, मंदिर दिखावे के केन्द्र बन रहे हैं जहाँ स्वयं को देखना था। आयोजन मीडिया के लिए हो रहे हैं। जिस आयोजन के पीछे 'कल्याण' शब्द जुड़ा हो, वहाँ देखने में आता है कि पंचकल्याणक चंद लोगों के लिए अर्थ कल्याण का आयोजन बनकर रह गया है? चातुर्मास चतुर बनने का समय होता है, सबसे अधिक मूर्खताएँ हम चातुर्मास के दौरान करते दिखाई देते हैं, चातुर्मास मूलरूप से जीव रक्षा के लिए होता है, लेकिन कितनी जीवरक्षा हमारे द्वारा की जा रही है, आयोजनों के नाम पर जितनी मायाचारी कषाय अर्थ लोलुपता, ग्रुपबाजी कलह इस दौरान सामन्यतः देखने को मिलती है। उससे तो लगता है कि चातुर्मास के दौरान सबसे ज्यादा पोषण उन चार कषायों का हो रहा होता है जो हमें चातुर्मास में धीरे-धीरे छोड़नी थी।



राजेन्द्र जैन 'महावीर'

खैर! कहने को बहुत है, हम मूल विषय पर आए तो पाते हैं कि जब हम सामान्यतः चर्चा करते हैं तो किसी के चाल-चलन के बारे में बात करते हैं तो कोई ठीक नहीं है तो कहते हैं बाकी सब तो ठीक है लेकिन उसके लक्षण ठीक नहीं है। धर्म के मामले में यदि हम जाने तो पाएंगे कि हमारी हालत कुछ ऐसी ही है, जैनधर्म की नीतियाँ, सिद्धान्त, साहित्य, आचरण के मामले में हमारे 'लक्षण' ठीक नहीं चल रहे हैं वो कैसे आइये हम जानते हैं।

सबसे पहले 'उत्तम क्षमा' धर्म की आराधना की जाती है। सब जानते हैं क्षमा का स्वरूप क्या है, धर्म के दशलक्षण में पहला है 'क्षमा' क्या हम सिखा पा रहे हैं 'क्षमा'? हम पहले दिन से ही प्रतियोगिताएँ करते हैं। जो प्रति-योगिता है, वह दूसरे के प्रति क्षमाभाव कैसे लायेगी, हमेशा प्रतियोगिता के लिए कुछ भी करने वाली प्रवृत्ति यानि जीतने के लिए जी-तोड़ मेहनत नहीं जुगाड़, साम-दाम-दण्ड-भेद सब होता है। क्या प्रतियोगिता 'क्षमा' धर्म का शिक्षण प्रदान कर सकती है? क्या हमारें अंदर उतना समझाव है, जिसमें हम सबको समान समझे?

हमें प्रतियोगिताएँ नहीं स्वयं की योग्यताएँ बढ़ाने की आवश्यकता है विचार करें।

उत्तम मार्दव में हम मान कषाय को घटाने की बात करते हैं, लेकिन धोती-दुपट्टा पहनकर जब हम अभिषेक करने जाते हैं वही से 'मान' का पोषण और अर्थ की प्रधानता प्रारम्भ हो जाती है, प्रवर्चनों को छोड़कर 'मान' कषाय का त्याग शायद ही कहीं देखने को मिलता हो। फिर भी 'उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना' हम बड़े राग के साथ गाकर उत्तम मार्दव पूर्ण करते हैं। और जरा भी विचार नहीं आता कि हम लोगों को कि हमारा 'ठिकाना' कहा जाकर लगेगा।

उत्तम आर्जव में कपट की बात आती है लेकिन व्यवहारिक जीवन में हम कपट के कितने मुख्यें लगा लेते हैं, एक बार भी ध्यान नहीं आता है और पूजा 364 दिन के लिए विराम ले लेती है, विनय और सरलता तो खोज का विषय है, आचार्यश्री विद्यासागरजी का कथन है - 'हम सरल होने की बात बहुत सरलता से कह देते हैं लेकिन सरल होना बहुत कठिन है' विचार की आवश्यकता है।

उत्तम शौच सुचिता की बात करता है 'लोभ पाप को बाप बखानो' समझना तो दूर पूजा करने में अनेक प्रकार के लोभ जैसे लोग क्या कहेंगे? सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिकता का ठप्पा, फिर पूजन सामग्री में तो सब दिख जाता है कि हम कह क्या रहे हैं और चढ़ा क्या रहे हैं?

उत्तम सत्य की तो बात करना बेमानी है, पहली ही लाईन में 'पर निंदा और झूठ तज' का कितना पालन एक दिन भी हो पाता है? और तो और 'सत्तवादी जग में सुखी' की जगह हम 'सत्तवादी जग में दुखी' पढ़ जाते हैं। बड़ा विरोधाभास है हमारी जीवनचर्या में।

उत्तम संयम धर्म की प्रथम दो लाईने सम्पूर्ण विश्व को पर्यावरण

सुरक्षा का सन्देश देती है -

**'काय छहों प्रतिपाल-पंचेन्द्रिय मन वश करों।
संज्ञम रतन सम्भाल विषय चोर बहु फिरता है।'**

सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण सुरक्षा का इससे बड़ा सन्देश नहीं हो सकता है जो इन दो लाईनों को समझ ले तो। लेकिन 'मन वश करो' में सारा खेल बिगड़ रहा है, वही वश में नहीं हो रहा है। लिखने का बहुत है लेकिन क्या-क्या लिखे, एक बात हो तो लिखी जाए, ज्यादा लिखो तो नकारात्मक चिंतन बाले हैं, ना लिखो तो पत्रकारिता का धर्म विदूषित होता है क्योंकि लिखेंगे नहीं तो सुधार कैसे होगा, चिंतन आवश्यक है।

तप-त्याग-आकिंचन व ब्रह्मचर्य के नाम पर क्या हो रहा है, बड़ा ही विचारणीय है, यह विचार कौन करेगा, समझ से परे है। क्योंकि जिनकी जिम्मेदारी है वे ही सब गलत करने व व्याख्या करने में लगे हैं।

लक्षण से जीना सिखाने में मेरे कुछ बिन्दु हैं जो हमें 0.01 प्रतिशत भी प्रेरित कर सके तो लेखन की सार्थकता है।

1. क्या हम जैनियों का यह लक्षण नहीं होना चाहिए विशेषकर दशलक्षण पर्व में कि इस दौरान तो हम धर्म के लक्षणों का पालन करेंगे।
2. क्या हम श्रीजी के अभिषेक की बोली के अलावा अन्य व्यवस्था नहीं बना सकते? क्या सारी इन्कम इन पर्व के दौरान ही करनी है?
3. क्या सारा दिखावा हमें इसी दौरान सूझता है?
4. क्या हमारा इन पर्वों को तामद्दाम, प्रतियोगिता, लाईटिंग से मनाना इस पर्व के मूलभूत सिद्धान्तों का उल्लंघन नहीं है?
5. पर्व मनाने के लिए है या उन लक्षणों को जीवन में उतारने का सन्देश देने वाले हैं?
6. क्या हमने इस पर्व को धन एकत्रित करने, प्रदर्शन करने का जरिया नहीं बना लिया है?
7. उत्तम त्याग के दिन आने वाले विद्वान के द्वारा व स्थानीय व्यवस्था के लिए धन का एकत्रीकरण इसकी मूल अवधारणा के खिलाफ है जिसका दुष्परिणाम है कि आहारदान स्वयं देने की बजाए किराये के लोगों से आहार दिलवाने की व्यवस्था तेजी से पनप रही है।
8. आज बड़ा ही चिंतनीय विषय है जिस तरह से सोशल मीडिया पर विडियो वायरल हो रहे हैं, जो 'परिग्रह चिंता दुःख ही मानो' को तो नेस्टनाबूद कर रहे हैं वहीं ब्रह्मचर्य के मूलभूत नियम 'माता-पिता सुता पढ़िचाने' को तार-तार कर दिग्म्बरत्व को रसातल में ले जा रहे हैं, और उपगूह अंग के नाम पर हमारे साथी उसे निरंतर ढक कर 'अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं।'
9. जैनधर्म की वैज्ञानिकता उसकी प्रामाणिकता, सिद्धान्त, धर्मग्रन्थ सिर्फ जैनधर्म की ही नहीं विश्व की अनमोल विरासत है आज भी ये सर्वाधिक प्रासंगिक व आत्मतत्व का दर्शन कराने वाला चिंतन है, जिसे महात्मा गांधी, विनोबा भावे ने जिया है। आज हम जितने भी महान व्यक्तित्व की चर्चा करें तो हम उसमें जैनतत्व का ही चिंतन पाते हैं।

10. बड़ा ही दुखद है कि जिस धर्म से हम 'रत्नत्रय' जैसी निधि पा सकते हैं उसे कागज के नोट कमाने में समय और श्रम बर्बाद कर रहे हैं वो भी व्यवस्था के नाम पर।

हम सबके सामने बहुत बड़ी चुनौती है कि हम धर्म को कैसे बचाए?

विचारणीय बिन्दु है - धर्म नीति से बचता है अनीति से नहीं।

- धर्म आचरण से बचता है दिखावे से नहीं।
- धर्म स्वयं के दर्शन से बचेगा न कि प्रदर्शन से।
- धर्म दस धर्मों की पूजा से नहीं, उसमें जो लिखा है उसके पालन से बचेगा।
- धर्म मंदिर की ऊँचाई से नहीं, मन में श्रद्धा की गहराई से बचेगा।
- धर्म समयसार से नहीं, समय (आत्मा) के सार को अपनाने से बचेगा।
- धर्म चर्चा से नहीं, स्वयं के जीवन में चर्चा से बचेगा।
- धर्म धार्मिक प्रतियोगिताओं से नहीं, धार्मिकता को धारण करने की योग्यता से बचेगा।
- धर्म शांतिधारा से नहीं, धर्म के माध्यम से आई जीवन में शांति की धारा से बचेगा।
- धर्म से मुक्ति नहीं, धर्म के आचरण से मुक्ति होगी।
- धर्म के दशलक्षणों को मनाने से नहीं, धर्म के लक्षण जीवन में उतारने से धर्म होगा।

ऐसे कई उदाहरण हैं, चर्चायें हैं जिनपर अनेकों पृष्ठ लिखे जा सकते हैं, लेकिन हम अब चेते अन्यथा हम नई पीढ़ी को कुछ नहीं दे पाएंगें।

अन्त में -

मच्छर ने आदमी को दिन में काटा तो आदमी ने कहा - तुम तो रात में काटते हो ना?

मच्छर बोला - अरे यार दशलक्षण पर्व चल रहे हैं ना इसलिए रात्रि भोजन का त्याग है।

शायद आप समझ गए होंगे कहीं हमारे लक्षण भी इसी तरह तो नहीं है कि इधर दशलक्षण समाप्त उधर हमारे सारे धर्म समाप्त? - विचार करें। लिखना मेरा धर्म है। मैंने अपना धर्म पूरा किया आप अपना धर्म पूरा कीजिये, यही धर्म है, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता, पारदर्शिता, समन्वय, सद्भावना, समर्पण, सद्विवेक, सद्विचार ये सब ऐसे शब्द हैं जो केवल दूसरों के लिए नहीं, स्वयं के लिए भी बनाये गए हैं।

आईये ध्यान रखें -

'जिंदगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, खुद अच्छे बनो।'

शायद आपसे मिलकर, किसी की तलाश पूरी हो जाए॥'

इसी कामना के साथ

सबसे अग्रिम क्षमा के साथ कि हमें वो लक्षण मिल जाए,

हम लक्षण के साथ जीना सीख जाए।

दशलक्षण धर्म की पवित्र शुभकामनाओं के साथ -

217, सोलकी कालोनी, सनावद,

मो. 9407492577

ई.मेल - rjainmahaveer@gmail.com



समाज की उन्नति में नारी की भूमिका



» श्रीमती सुषमा जैन
मिलाई (म.प्र.), नो. 9826523175



शिक्षण, शासकीय सेवा, प्रशासन एवं व्याय व्यवस्था औद्योगिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीति इन सभी क्षेत्रों में हमारी बहने अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाये हुए हैं। आज हमारे समाज की नारी डाक्टर, इंजीनियर, वकील, व्यायाधीश, विद्यायक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक व शिक्षण के क्षेत्र में अनेक उच्च पदों पर कार्यरत हैं। हमारी इन बहनों को विचारना चाहिए कि हम अपनी योग्यता से समाज के उत्थान में कैसे सहयोगी बन सकते हैं।

जिस समाज को संगठन के प्रारंभिक प्रयासों में पूज्य मानवतावादी संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद एवं दिशा निर्देश मिलता रहा हो उस समाज का निरंतर उन्नति के पथ पर बढ़ते जाना निश्चित है। समाज की वर्तमान अवस्था तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो इसका गौरवपूर्ण इतिहास जानने के लिए अनेक प्रशस्तियों और शिलालेख उपलब्ध हैं। इतिहास की इस धरोहर का अवलोकन करने पर हमें लगता है कि हमारे पूर्वज कितने कर्तव्य परायण, धर्म निष्ठ, स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे, उन्होंने ज्ञान के साथ साथ चरित्र को प्रधानता देते हुए जीवन के हर क्षेत्र में अपने व्यापक दृष्टिकोण और सूझाबूझ से अपनी वैचारिक व भौतिक सम्पदा का उपयोग किया। जब मैं समाज के गौरव अतीत की ओर निहारती हो तो मुझे किसी सुविज्ञ की ये पक्कियाँ याद आ जाती है-

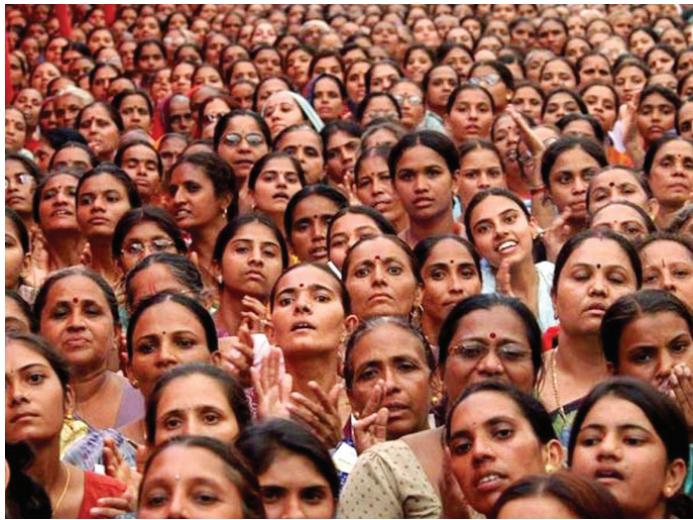
**शानदार था भूत, भविष्यत् भी महान् है।
गर सम्भालें आप उसे जो वर्तमान है।।**

हमारे वर्तमान का सम्यक पुरुषार्थ का नियोजन ही समाज के विकास में सहायक होता है। जीवन में यदि स्थायित्व चाहिए तो स्त्री पुरुष दोनों का बुद्धि ज्ञान और व्यवहारिक सम्पति की दृष्टि से समान होना जरूरी है। श्री 108 आयार्च विद्यानंद जी के अनुसार ‘‘समाज की रचना में पुरुष और स्त्री दो समान अविभाज्य अंग हैं। पुरुष के बिना समाज गति हीन है और स्त्री के बिना स्थिति हीन है।’’ नारी हृदय की स्थिरता और वात्सल्य ही परिवार व समाज की उन्नति में सहायक है। उसके स्वभाव में दया, करुणा और स्नेह के साथ-साथ संगठन की

अद्भुत क्षमता विद्यमान है। जहाँ नारी ने इन्हें अपने व्यक्तित्व निर्माण में संयोजित किया वहाँ शिक्षा, व्यवसाय एवं सामाजिक कार्यों में अनेक ऊँचाइयाँ पाई। बुजर्गों का अनुभव, जवानों का उत्साह, नारी की समझदारी एवं पुरुषों का पराक्रम ये मिलकर चले तो समाज में चमलकार हो जाये। महिला संगठन समाज के चहूँमुखी विकास में सहयोगी होता है। परिवार एवं समाज को स्थायित्व देने का दायित्व स्त्री ही निभा सकती है।

संस्कार एवं शिक्षा

जहाँ तक शिक्षा और संस्कार की बात करें तो माता ही सबसे पहली गुरु होती है शिशु की। माता के गर्भ में आते ही शिशु में संस्कार आना प्रारम्भ हो जात है। और पांच वर्ष की आयु तक प्राय संस्कार पड़ चुके हैं जैसे दूध को गर्म करते वक्त हर क्षण सावधानी रखते हैं कि उफन कर नीचे ना गिरे ठीक इसी तरह प्रत्येक माता को हर क्षण सावधानी रखनी पड़ती है कि बच्चों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करें यह वह समय होता है जब बच्चों में धर्म के संस्कार डाले और देव शास्त्र, गुरु की शरण भगवान की भक्ति की सीख बच्चों को देवं बड़े के प्रति विनय व आदर का भाव वह हमारे आचरण से ही सीखता है। ये संस्कार बच्चों में बड़ी सहजता से जैन पाठशालाओं के माध्यम से डाले जा सकते हैं। साथ ही धनी निर्धन सभी बालक बालिकाओं के शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं व्यावसा यिक शिक्षा के साधन उपलब्ध कराना हमारा प्रथम कर्तव्य है। ऐसे ही संस्कारित एवं शिक्षित बच्चे आगे चलकर



जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। सुशिक्षित बालक-बालिकायें ही आगे जाकर जीवन में परिवार एवं समाज में सांमंजस्य बनाये रख सकते हैं। आज की आपा-धापी और भौतिकता की चकाचौंथ के बीच भी नारी सहजता, सरलता, धैर्य, और कुशल व्यवस्थापन के गुणों के बलबूते पर ही परिवार में सांमंजस्य बना पाती है।

समाज संगठन में नारी

सामाजिक संगठन के क्षेत्र में आज की नारी पुरुष के साथ बराबरी से खड़ी है। कुशल प्रबंधन और कोमलता के साथ दृढ़ता का गुण ही है जिसके सहारे नारी परिवार के सदस्यों को अपने स्नेह के धारों में ठीक वैसे ही बधे रहती है। जैसे बिखरे हुए फूल जब धागे में पिरो दिये जाए तो माला बन जाती है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में साधु-संतों की सेवा, समाज कल्याण के कार्य, स्वास्थ्य शिविर, शिक्षण शिविर, पूजा संस्कार शिविरों के माध्यम से सहयोगी बनती है। निर्धन परिवारों के लिए उनके व्यवसाय में सहयोगी बनना, उनका मनोबल बढ़ाना और उन्हें आश्वस्त करना कि तुम चलो हम तुम्हारे साथ हैं। यह एक सूत्रता समाज को स्थायित्व प्रदान करती है।

अन्य क्षेत्रों में नारी

शिक्षण, शासकीय सेवा, प्रशासन एवं न्याय व्यवस्था औद्योगिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीति इन सभी क्षेत्रों में हमारी बहने अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाये हुए हैं। आज हमारे समाज की नारी डाक्टर, इंजीनियर, वकील, न्यायाधीश, विधायक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक व शिक्षण के क्षेत्र में अनेक उच्च पदों पर कार्यरत है। हमारी इन बहनों को विचारना चाहिए कि हम अपनी योग्यता से समाज के उत्थान में कैसे सहयोगी बन सकते हैं।

पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण

होना तो यह चाहिए था कि नारी अपनी पहचान ऐसी बनाती कि उसकी सामर्थ्य, कर्मठता, निर्भीकता, धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण की व्यापकता उसके व्यवहार में होती। पर कुछ बहने पाश्चात्य सम्पदा का अन्धानुकरण करती हुई दिखावा और प्रदर्शन के चक्र में अपनी अस्मिता खोती नजर

आती है। इस विवेक हीनता का परिणाम समाज को खोखला और दिशाहीन बनाता है।

दहेज

पहले कन्या की कुलीनता, संस्कार, आचरण देखा जाता था। आज कई परिवारों में कन्या की योग्यता से ज्यादा महत्व दहेज को दिया जाता है जो कि समाज के लिए अभिशाप है। जरा विचार कीजिए, यहां कहीं नारी ही नारी की दुश्मन तो नहीं बन रही। इस दहेज रूपी दानव से बचने के लिए समाज में युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन सामूहिक विवाह की व्यवस्था एक सुखद संकेत है।

भ्रूण हत्या एवं सामाजिक असंतुलन

नारी का वास्त्विक दायित्व माता बनने से प्रारंभ होता है। अगर मातृत्व ही चला गया तो नारी के पास बचेगा क्या। आज आर्थिक कारण से अथवा शरीर के आकर्षण बनाये रखने की भावना से या कारण जो भी हो नारी ने भ्रूण हत्या जैसा पाप स्वीकार किया है जो भीषण अपराध है। जैन दर्शन की मान्यता बहुत स्पष्ट है। जब जीव माता के गर्भ में आता है वहीं उसके जन्म का क्षण है फिर माताओं उसे अवांछित, मानकर गर्भपात कराने का कार्य करती है तब वह एक संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य की हत्या कर रही होती है। दूसरी तरह से यदि विचारें कि जब कोई अबोध शिशु को दंडित करता या मारता है तो वह शिशु दौड़ कर अपनी माँ की गोद में जा बैठता है। कभी कदाचित माता ही दंडित करे तब भी वह शिशु कहीं और न जाकर माता से ही लिपटता है। यदि माता ही उसकी हत्या करने के लिए उत्तरु हो तो तीन लोक में उसकी रक्षा कौन करेगा। कन्या भ्रूण हत्या का ही परिणाम है कि आज समाज में असन्तुलन की स्थिति बनी है। नारी के लिए भगवान महावीर का यह उपदेश सर्वोपरि होना चाहिए जिसमें उन्होंने संक्षेप में अहिंसा धर्म का प्रतिपादन करते हुये कहा ‘जियो और जीने दो’।

कोटा उपदेश धोबी तुल्य है

● चा.च.आ. शांतिसागरजी महाराज

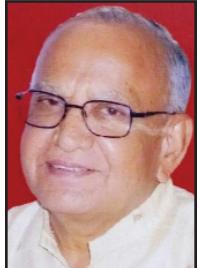
अपने स्वरूप को बिना जाने जो जगत को चिल्लाकर उपदेश दिया जाता है, उसके विषय में आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज ने बड़े अनुभव की बात कही थी-

‘जब तुम्हारे पास कुछ नहीं है, तब जग को तुम क्या दोगे?’ भव-भव में तुमने धोबी का काम किया। दूसरों के कपड़े धोते रहे और अपने को निर्मल बनाने की ओर तनिक भी विचार नहीं किया। अरे भाई! पहले अपनी आत्मा को उपदेश दो, नाना प्रकार की मिथ्या तरंगों को अपने मन से हटाओ, फिर उपदेश दो। केवल जगत को धोते बैठने से शुद्धि नहीं होगी। थोड़ी भी आत्मा का कल्याण कर लिया तो बहुत है।’

(संस्मरण चारित्रि चक्रवर्ती ग्रंथ से)



बेटा क्या, अब तो बेटी को भी क्षमा करना उचित



» सुरेश जैन 'सरल'

जबलपुर (म.प्र.), मो. 8770188832

फ्रमशः 10 अप्रैल एवं 24 अप्रैल 2019 के जैन संदेश में श्रद्धेय स्व.

युगवीरजी का निबंध पढ़ने को मिला, जिसे श्री ओमप्रकाशजी जैन कोसी (महामंत्री) ने अपनी लेखनी से प्रस्तुत किया है। प्रकाशन 1963 का है। मतलब उससे भी पहले लिखा गया होगा उक्त दिशा प्रधान लेख। कहें-कि 6 दशक पूर्व से ही जैन समाज को सुधारवाद की रोशनी मिल रही थी।

उक्त लेख से प्रभावित होकर ही मैं यह लेख लिख रहा हूँ। हर नगर में धर्म, धान्य और दान से सज्जित लोग उपलब्ध हो रहे हैं जिनके बेटा-बेटी मुन्बई, चेन्नई, पुणे, बैंगलुरु, दिल्ली, कोलकाता आदि बड़े नगरों में रहकर सर्विस कर रहे हैं। उनका वेतन साठ हजार से लेकर ढाई लाख रु. प्रतिमाह तक है। उन्हें अपनी सर्विस और पैसा इन्तें अधिक प्यारे लगते हैं कि माता-पिता से वर्ष में कभी एक बार तो कभी दो बार ही क्षणिक मिलना-जुलना कर पाते हैं और 12 से 15 घंटे नौकरी की जंजीर में बंधे रहते हैं रोज़।

उस संतान की जवानी आकर विदाइ लेने लगती है, पर वे शादी नहीं कर पाते। अक्सर 30 से 35 की उम्र हो जाती है। अब चूँकि उन्हें सर्विस और उच्च वेतन से मोहर है, अतः वे पालकों द्वारा चयनित लड़के-लड़कियों से मुँह मोड़े रहते हैं। फिर अपने ही संस्थान/शहर के किसी पात्र से शादी रखाने को विवश हो जाते हैं। एक प्रतिशत तो जाति में ही सफलता पा जाते हैं, परंतु साठ प्रतिशत संतान जाति बंधन तोड़कर विवाह कर रही है। उनकी विवशता के पीछे वही मोटी तनख्बाह और उच्च नौकरी रहती है। एक मायने में पैसे के पीछे जाति छोड़ देते हैं। जाति, माता-पिता, भाई-बहन छोड़ने वाली यह संतान इन्हीं स्वार्थी हो जाती है कि उसी शहर में रहकर अपने आनंद में ढूबी रहती है। धीरे-धीरे उनके घरों में भी संतान का आगमन शुरू हो जाता है। फलतः वहाँ ही रच-पच जाता है उनका परिवार।

चूँकि छोड़ा गया पालकों का परिवार उनसे मोह नहीं तोड़ पाता इसलिए उनके कृत्य को क्षमा कर उनका ही समीप चाहता रहता है। माता-पिता तड़पते रहते हैं पुत्र और पुत्रवधु के दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं। तब वे खुद संतान के नगर जाकर, उनके साथ दो-चार दिन रहकर लौट आते हैं।

पालकों और संतान का इसे बिध जाना कहते हैं। ऐसे समय में समाज के विवेक की आवश्यकता ही रास्ता निकालती है। समाज यानी पालकों को

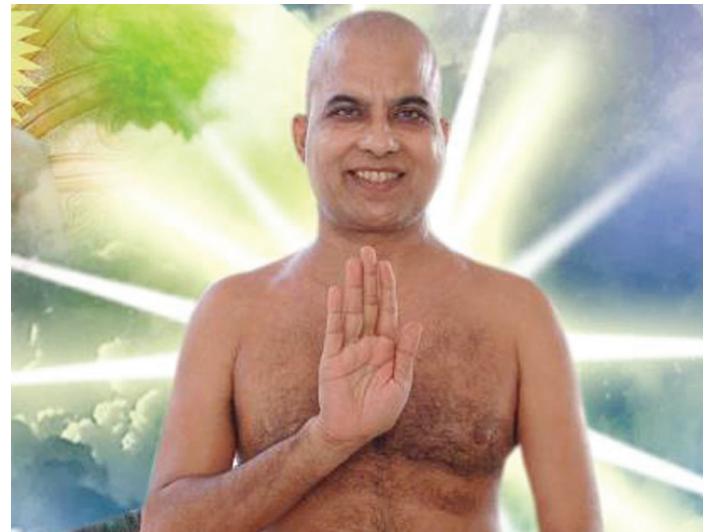


चाहिए कि वे संतान के पारिवारिक आनंद में ही अपना आनंद देखें। संतान (बेटा या बेटी) के लिए प्रशस्त पथ का निर्माण करें। उनकी जोड़ी में जो अजैन-पात्र हों, उसे अपने प्रेम, वात्सल्य और त्याग से धर्म का हल्का सा परिचय कराते रहें। वह जैन सिद्धांतों के प्रति ऋजु हों, आपकी बात मानने लगे, तब उनसे करुणा मिश्रित वार्ता कर कहें- 'सप्ताह भर व्यस्त रहते हो, तो सात दिन में केवल एक बार शाम को 7 से 10 के बीच में एक-दूसरे की कार से मंदिर जावें। जोड़ी का एक पात्र जो जैन है, वह समझाए कि मंदिरजी में मात्र आरती करना है।'

यदि वे दो-चार सप्ताह तक क्रम बना लें तो उनसे 7 दिन में दो बार जाने का निवेदन करें। अजैन पात्र के समक्ष त्याग की सामान्य ढंग से चर्चा करें। बतलाएँ कि हम रात्रि भोजन का त्याग रखते हैं। नहीं सध्यता तो समय सीमा तय कर लेते हैं कि रात्रि 9 बजे तक ही भोजन लेंगे। न ले पाएँ तो फलाहारी पदार्थ लेंगे। दो-चार माह बाद जब पात्र आपको बहुत पसंद करने लगे तो उनसे नशा त्याग की बात करिये, घर के बाहर मांसाहार का जब-तब सेवन कर लेना हो तो विनयपूर्वक उनसे वह त्याग भी करा लीजिये।

इस तरह आपका प्यार पूर्ण व्यवहार उस पात्र को श्रावक बन जाने का सोपान प्रदान करेगा। हमारा समाज तो तीर्थकर महावीर के युग से पदच्युत लोगों में श्रावकत्व भरता रहा है। सो यह 'बड़ा कार्य' एक साधक की तरह साधिये और जोड़ी की भूल को नव विहान प्रदान कीजिये। इसमें समय लगाइये, तुरंत अपेक्षा न कीजिये। कम से कम तीन वर्ष से तक उन्हें जगाते रहिये। तब हमें खुद पर विश्वास होगा कि हम भी समाज सुधारक हैं।

ऐसे समय में महावीर, बौद्ध, कबीर, गाँधी, विनोबा का जीवन दर्शन मन में रखिये।



धरा-धरती के पुण्य से होता है

संतों का चातुर्मास

» गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी

चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना का नाम है, चातुर्मास स्व-पर कल्याण की प्रार्थना का नाम है। चातुर्मास एक ही स्थान पर चार माह स्थिर रहने का नाम है, चातुर्मास प्राणी संयम और इन्द्रिय संयम की पालना का नाम है॥

संतों का चातुर्मास धरा-धरती के असीम पुण्य से होता है और उसमें वे ही व्यक्ति निमित्त बनते हैं जिनका अनेक भवों का पुण्य सत्ता में रहता है।

बंधुओं! वर्षायोग की यह पावन बेला हर नगर, ग्राम, समाज, परिवार तथा घर के श्रावकों को आनंद विभोर करने वाली है। इस अवसर पर साधुओं का समागम प्राप्त करने वाले हर नगर हर्ष खुशी से झूम रहे हैं। जिस-जिस जगह भी साधुसंत विराजमान हैं, उन सभी स्थानों पर चातुर्मास स्थापना का कार्यक्रम होता है। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से श्रावण कृष्ण पंचमी तक हर जगह कलश स्थापना का यह कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से किया जाता है।

यूँ तो वर्षायोग की प्रार्थना चातुर्मास से ही प्रारंभ हो जाती है। जहाँ भी हमारे संघ का वर्षायोग होता है वहाँ की समिति चातुर्मास में ही अगले चातुर्मास की प्रार्थना करने लगती है और इसके बाद जिस-जिस नगर, शहरों से संघ का विहार होता है, कोई कार्यक्रम होता है, वहाँ की समाज भी चातुर्मास की प्रार्थना किये बिना नहीं रहती। हर नगर, ग्रामवासियों की हार्दिक भावना रहती है कि संतों का चातुर्मास हमारे नगर, हमारे शहर और हमारे गाँव, मोहल्ले में हो। लेकिन यह बात भी बिल्कुल सत्य है कि हर किसी को वर्षायोग का अवसर नहीं मिल पाता। जिस नगर-ग्राम के श्रावकों का पुराना पुण्य उदय में रहता है उन्हें ही यह अवसर प्राप्त होता है।

प्रायः लोग पहले तो हमारे बड़े संघ को देखकर घबरा जाते हैं क्योंकि आमतौर पर दो-चार पिछ्छीयों का चातुर्मास करना लोगों को कठिन हो जाता है, लोग परेशान हो जाते हैं। वहाँ हमारे संघ की 50 से 80-90 तक पिछ्छीधारी साधुओं का संघ देखकर तो लोग सोच में पड़ जाते हैं। इतने बड़े संघ का चातुर्मास कैसे होगा? लेकिन बंधुओं! ध्यान रखो, संतों की तपस्या में बड़ी शक्ति होती है। संतों का बड़ा प्रबल पुण्य होता है। यद्यपि दिगंबर जैन श्रमण, साधनों के पीछे नहीं चलते फिर भी उनकी निर्दोष रत्नत्रय की साधना से स्वयं ही साधन उपलब्ध हो जाते हैं। उनके जाने से जंगल में भी मंगल हो जाता है। जब अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि में हमारे संघ का चातुर्मास होना निश्चित हुआ तो लोग घबरा गए। महाराज! जंगल में, जहाँ समाज का एक भी घर नहीं है वहाँ चातुर्मास कैसे होगा? कौन चौका लगाएगा? कौन कार्यक्रम में उपस्थित होगा? बाहर से आने वाले यात्री भी वहाँ तक कैसे

पहुँच पाएँगे। मैंने कहा- साधुओं के पुण्य से सब होगा और बड़ी धूमधाम से वहाँ का चातुर्मास संपन्न हुआ। पंचकल्याणक जैसा महामहोस्तव भी आयोजित हुआ। किसी बात की कोई कमी नहीं रही। चौकों की तो ऐसी लाइन लगी कि समिति वालों के पास कमरे भी कम पड़े गए। वेटिंग में नाम रखे गए। सन् 2018 का चातुर्मास 90 पिछ्छीयों का सम्मेदशिखरजी में हुआ। वहाँ की समिति (तेरहपंथी कोटी) पहले तो इस बात से चिंतित थी कि बाकी सब व्यक्तस्थाएँ तो हम लोग कर लेंगे लेकिन चौके की व्यक्तस्था कैसे होगी? जब वहाँ संघ पहुँचा तो चौकों की लाइन लग गई। 25-30 चौके स्थायी रूप से फिक्स हो गए। तेरहपंथी कोटी की 35 कमरे वाली एक धर्मशाला सिर्फ चौकों से फुल हो गई। इसके बाद बीसपंथी कोटी में 8-10 चौके मध्यलोक में तथा जिनकी जो संस्थाएँ थीं, उनमें एवं स्थानीय समाज के घरों में चौके लगे। परिणाम यह निकला कि 108 साधु होने पर भी चौके खाली जाने लगे। कहने का तात्पर्य है साधुओं के पुण्य से व्यक्तस्थाएँ स्वयं ही चलकर आ जाती हैं।

जब हमारा संघ खंडगिरि से कलकत्ता की ओर विहार कर रहा था तो लोग पूछते थे चातुर्मास कलकत्ता में होगा। मैंने कहा- कलकत्ता से मेरा कोई वास्ता नहीं है। वह तो हमारे विहार का रास्ता है। हम लोग सोच रहे थे कि इतने बड़े संघ को देखकर शायद कोलकाता वाले घबरा जाएँगे। लेकिन यहाँ तो हावड़ा बंगवासी में प्रवेश होते ही चातुर्मास की प्रार्थना शुरू हो गई। मैंने कहा- अरे! किराये की बिल्डिंग में तो रुकाए हो, और चातुर्मास की प्रार्थना कर रहे हो। बोले- आप बस स्वीकृति दें, हम इसे चार माह के लिए बुक कर लेंगे। जब संघ डबसन पहुँचा तो वहाँ श्वेतांबर समाज की बिल्डिंग थी। वे भी चातुर्मास की प्रार्थना करने लगे। सभी जगह की प्रार्थनाएँ सुनकर प्रदीपजी घबरा गए। बोले- महाराज! आप पहले बेलगछिया चलो, बाद में कहीं जाना। चातुर्मास तो हम बेलगछिया में कराएँगे। लेकिन वहाँ स्थान की कुछ समस्या थी। संघ के आने से वह भी हल गई। तब तो प्रार्थना में और अधिक जोर लग गया।

बंधुओं! चातुर्मास भव्य जीवों के पुण्य से होता है। अतः जब कभी आपको चातुर्मास का अवसर प्राप्त हो तो संत-समागम का पूरा लाभ उठाएँ। इसी में चातुर्मास की सार्थकता है।



वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दिगंबर जैन उपजाति संगठनों की आवश्यकता एवं महत्व



» चक्रेश शास्त्री

उपाध्यक्ष एवं संयोजक
उपजाति संगठन सम्मान समिति
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

गोलापूर्व समाज, दिगंबर जैन समाज की एक महान कड़ी है। गोलापूर्व समाज ने दिगंबर धर्म की रक्षा करते हुए काफी उंचाईयाँ दी हैं। गोलापूर्व से अनेक मुनि बने हैं और अनेक विद्वान बने हैं, जिन्होंने जिन शासन की प्रभावना भारत ही नहीं वरन् विश्व में फैलाई है। श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा का शुरू से नारा है कि जातीय संगठन को मजबूत करो। जातीय संगठन मजबूत होने से ही दिगंबर परम्परा सुरक्षित रहेगी।

भारत सरकार द्वारा 2011 में जारी जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार देश में जैनों की जनसंख्या 45.00 लाख भी नहीं है। इसमें श्वेताम्बर और दिगंबर दोनों शामिल हैं। वर्तमान में घटती जैन जनसंख्या चिन्ता का विषय है, उस पर भी यदि हम पंथवाद, संतवाद, ग्रंथवाद में भी बँटेंगे तो हमारी शक्ति और भी क्षीण होगी। समग्र जैन समाज को संगठित व मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है कि समस्त दिगंबर उपजातियाँ अपने-अपने संगठन बनाए और सम्पूर्ण समाज को उससे जोड़ें। यदि हमारी जैन समाज के ये आधार स्तंभ मजबूत होंगे तो उस पर खड़ा सम्पूर्ण भवन (समग्र समाज) भी मजबूत होगा।

सन 1918 में अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का गठन हुआ। तत्कालीन समय में कुछ और उपजातियों के संगठन भी अस्तित्व में आए। गोलापूर्व मुख्यपत्र के वर्ष 7 अंक 12 में श्री शंकरलाल जी तिवारी ने श्वेताम्बर और दिगंबर जैन के मतभेदों और उसके फलस्वरूप क्षीण होती जैन समाज की शक्ति के संबंध में प्रेरक लेख लिखा जिसमें संगठन की शक्ति

के लिए कलकत्ता में हुए हिन्दु-मुस्लिम दंगों के समय का उदाहरण भी दिया है, “मुसलमानों ने जैन मंदिर को घेर लिया था उस समय मंदिर की रक्षार्थ एक भी जैनी नहीं आया, मंदिर की रक्षा का श्रेय सिक्खों और कॉलेज के बंगाली लड़कों ने प्राप्त किया था।”

1921 में गोलापूर्व महासभा द्वारा समस्त उपजाति और समग्र जैन समाज के उत्थान की बात की पं. गुलाबचन्द जी कटनी ने अपने लेख के माध्यम से पदमावती पुरवार, जैसवाल-उपरैचिया, खण्डेलवाल, परवार आदि के संगठनों को संगठित करने का आव्हान किया।

दिगंबर जैन समाज को संगठित और मजबूत करने के प्रयास गोलापूर्व महासभा ने हमेशा किए हैं उसी क्रम में महासभा के शताब्दी वर्ष 1918-2018 में महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान पुनः दिगंबर जैन की समस्त उपजातियों के राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष-मंत्री को आमंत्रित किया गया। दिगंबर जैन समाज के पल्लीवाल, तारण-तरण, परवार, हूमड़, मैवाड़ बागड़ दशा नरसिंहपुरा, बघेरवाल, खरौआ, पदमावती पोरवाल, गोलालारे, अग्रवाल, जैसवाल, खण्डेलवाल, पोड़वाल, सेतवाल, बरैया आदि उपजाति संगठनों के राष्ट्रीय अध्यक्ष-मंत्री-प्रतिनिधि उपस्थित हुए या पदाधिकारियों की बधाइयाँ और शुभकामना संदेश महासभा को प्राप्त हुए।

फेडरेशन ऑफ दिगंबर जैन हूमड़ समाज के प्रथम अध्यक्ष जैन युवा रत्न श्री हंसमुख जैन गांधी ने त्रिविसीय कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में



उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि आज समाज में जो बिखराव है उसे दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम सभी एकजुट होकर कार्य करें। उन्होंने गोलापूर्व समाज के आयोजन की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर पुनः एकत्रित होने की आवश्यकता बताई। आपने लगभग दस वर्ष पूर्व श्री सिद्धवरकूट में हुए दिगंबर जैन उपजातीय सम्मेलन की याद करते हुए पुनः आयोजन हो इसके लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस ही परवार समाज के प्रतिनिधि के रूप में श्री अनिल जैन ‘नैनधरा’, श्री मुकेश जैन ‘दाना’ आदि उपस्थित रहे। उन्होंने बुन्देलखण्ड के समग्र समाज का एक साथ खड़े होने का संदेश दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस पर महासभा के निदेशक एवं वरिष्ठ विद्वान श्री भागचन्द भागेन्द्र जी ने गोलापूर्व समाज के गौरवशाली इतिहास से अतिथियों को अवगत कराया। निदेशक श्री बाल ब्रह्मचारी जय निशान्तजी ने जैन समाज और धर्म के लिए गोलापूर्व समाज के अवदान और किए जा रहे प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी।

आज अपना सान्निध्य दे रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय

पल्लीवाल जैन महासभा (पल्लीवाल, जैसवाल एवं सैलवाल समाज की प्रतिनिधि संस्था) के श्रीमान आर.सी.जैन आई.ए.एस. (से.नि.) ने कार्यक्रम के संयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि विभिन्न आम्नायों एवं उपजातियों का अस्तित्व बनाए रखते हुए कम से कम सामाजिक स्तर पर समस्त जैन एक साथ आयें। उन्होंने कहा कि मुझे अवगत कराते हुए हर्ष है कि “अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के द्वाण्डे तले पल्लीवाल, सैलवाल तथा जैसवाल उपजातियाँ अपनी विभिन्न आम्नायों के साथ सामाजिक स्तर पर एक हैं। सभी लोग एक दूसरे के धार्मिक कार्यक्रमों में भी उत्साह से भाग लेते हैं। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में पूरा जैन समाज उपजातियों एवं आम्नायों के बंधन तोड़कर सामाजिक रूप से अवश्य एक सूत्र में बंध जायेगा। उन्होंने समाज में शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। श्री जैन ने सुबोध शिक्षा समिति जयपुर जिसकी कार्यकारिणी में वे 16 वर्षों से हैं, का उद्घारण करते हुए बताया कि समिति 18 शिक्षा संस्थायें चला रही है और लगभग 33 हजार बच्चों को शिक्षित कर रही है। इस वर्ष समिति का बजट 100 करोड़ से अधिक है। इस प्रकार के कार्य भी सभी उपजाति संगठनों को करना चाहिए।



दशा हूमड़ जैन समाज के इन्टरनेशनल फेडरेशन के अध्यक्ष बैंक से से.नि. श्री दिवेशचन्द्र शाह ने अपने शुभकामना संदेश में उल्लेख किया है कि दिगम्बर जैन समाज का एकता के सूत्र में बांधने के लिए गोलापूर्व समाज द्वारा किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है, हम आपके प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

श्री तारण-तरण दिगम्बर जैन महासभा न्यास के श्री सर श्रीमंत सेठ अशोक कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि बुद्धेलखण्ड और दिगम्बर जैन समाज में गोलापूर्व समाज का अतुलनीय योगदान है। गोलापूर्व समाज ने विद्वता और धर्म के क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग प्रदान किया। समग्र दिगम्बर जैन समाज के संगठन और एकता के लिए तारण-तरण समाज हमेशा तत्पर रहेगी। तारण-तरण दिगम्बर जैन महासभा न्यास के 1993 से लगातार निर्विरोध निर्वाचित होने वाले महामंत्री श्री सिंघई ज्ञानचन्द्र जैन ने कहा कि तारण-तरण दिगम्बर जैन समाज संख्या में भले ही अल्प है, किन्तु यदि समग्र समाज की एकता के लिए कोई कार्य किया जाता है तो निश्चित रूप से तारण-तरण समाज अग्रिम पंक्ति में आकर सहयोग करेगी।

अखिल भारतवर्षीय श्री दिगम्बर जैन बैरेया महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री माताप्रसाद जैन भंडारी ने गोलापूर्व महासभा के द्वारा किए जा रहे प्रयासों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हमारी दिगम्बर जैन समाज में इतनी उपजातियाँ हैं और गोलापूर्व

समाज द्वारा 14 वर्षों से लगातार दिगम्बर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अपने कार्यकाल में 10 सामूहिक विवाह समारोह सम्पन्न कराए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बैरेया समाज के अध्यक्ष रहते हुए एक कल्याण कोष की भी स्थापना की है, जिसके माध्यम से वर्तमान में 50 लाख की राशि से समाज के कमजोर वर्ग की सहायता की जा रही है, अतः सभी उपजातियों को इस प्रकार के कोष बनाकर समाज के जरूरतमंद और कमजोर वर्ग की सहायता करनी चाहिए। अखिल भारतीय श्री दिगम्बर जैन बैरेया समाज के महामंत्री श्री नरेन्द्र “सोनू” ने कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में कहा कि आज गोलापूर्व समाज के इस कार्यक्रम शामिल होकर प्रसन्नता हो रही है, गोलापूर्व समाज अपने समाज के उत्थान के कार्यों के साथ-साथ जन कल्याण के कार्य भी कर रही है। मैं देख रहा हूँ कि मेडिकल कैम्प लगाए गए हैं, नेत्र परीक्षण और निःशुल्क चश्मा वितरण किया जा रहा है। इस प्रकार के कार्यों से जैनेतर समाज में भी जैन समाज की अच्छी छवि बनती है।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजीव रत्न जैन ने अपनी बात जैन समाज की घटती संख्या या जनसंख्या में आ रही कमी से शुरू की और आवश्यकता बताई कि इस विषय पर सम्पूर्ण जैन समाज को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। श्री राजीव जी ने उल्लेख किया कि उनके पिता श्री भोलानाथ जी ने मध्यप्रदेश में सामूहिक विवाह सम्मेलन को प्रोत्साहन दिया है और अपने दो पुत्रों का विवाह भी सामूहिक विवाह सम्मेलन में ही किया था। गोलापूर्व महासभा से भी आव्हान किया कि परिचय सम्मेलन के साथ सामूहिक विवाह सम्मेलन भी आयोजित करें। गोलालारे दिगम्बर जैन उपजाति के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. सुधीर जैन जो विज्ञान के साथ-साथ जैनागम में रुचिवान है ने अपनी शुभकामनाएं महासभा को प्रेषित की।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षणी) महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी ने अपने प्रेषित पत्र में संदेश दिया कि गोलापूर्व समाज, दिगम्बर जैन समाज की एक महान कड़ी है। गोलापूर्व समाज ने दिगम्बर धर्म की रक्षा करते हुए काफी ऊँचाईयाँ दी हैं। गोलापूर्व से अनेक मुनि बने हैं और अनेक विद्वान बने हैं, जिन्होंने जिन शासन की प्रभावना भारत ही नहीं वरन् विश्व में फैलाई है। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का शुरू से नारा है कि जातीय संगठन को मजबूत करो। जातीय संगठन मजबूत होने से ही दिगम्बर परम्परा सुरक्षित रहेगी।

मैं आपके महान समाज गोलापूर्व से यही निवेदन करता हूँ कि आप सज्जातीय विवाह की परम्परा को न छोड़ें और इसके लिए जगह-जगह परिचय सम्मेलन करें जिससे एक दूसरे से परिचय होगा और हमारी जाति की रक्षा होगी।

गोलापूर्व महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष जैन घड़ी ने अपने उद्बोधन में सभी अतिथियों का आभार ज्ञापित किया तथा समस्त उपजाति संगठनों की मजबूती के लिए पुनः मिलने की आशा व्यक्त की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी उपजाति संगठन के पदाधिकारियों का महासभा के निदेशक मण्डल, राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री आदि पदाधिकारियों ने स्मृति चिन्ह, शाल श्रीफल से सम्मान किया। कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं उपजाति संगठन सम्मान समिति के संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री भोपाल ने किया।



ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर नवागढ़



» डॉ. सुनील संचय

प्रचार मंत्री, नवागढ़ क्षेत्र प्रबंधकारिणी कमेटी

नवागढ़ में होने वाली खोज यहाँ की समृद्ध संस्कृति, इतिहास, राजनीतिक संबद्धता, यहाँ के ग्रामीण जनों की खुशहाली को दर्शाते हैं। ना जाने कितने क्षेत्र में फैला होगा नवागढ़, जहाँ आज अनेक साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं।

प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ में खुदाई में मिले प्राचीन ऐतिहासिक अवशेष



लिलितपुर जनपद हमारी अमूल्य विरासत ऐतिहासिक प्राचीनता तथा पुरातत्व से भरा पड़ा है। यहाँ पर्यटन की असीम संभावनाएँ हैं। जनपद का एक ऐसा ही पुरातात्त्विक महत्व से भरा पड़ा हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर है नवागढ़। यहाँ खुदाई के दौरान अनेक पुरा महत्व के अति प्राचीन ऐतिहासिक तथ्य व साक्ष्य निरन्तर मिल रहे हैं जिन पर लगातार अन्वेषण जारी है। अभी संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य, एकांत प्रिय, मुनि श्री सरल सागर महाराज का मंगल चातुर्मास महरौनी विकासखंड में स्थित प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ में चल रहा है। क्षेत्र के निर्देशक ब्र. जयकुमार जी निशांत भैया ने बताया कि इस दौरान यहाँ चल रहे संत भवन एवं अनुष्ठान मंडप के निर्माण हेतु किए गए खनन में प्राचीन मृदभांड प्राप्त हुए हैं। ग्रामीण जनों का कहना है इस प्रकार के पात्र हमने कभी नहीं देखे हैं, इस प्रकार की रचना प्राचीन काल में रही होगी।



» लोग चाहते हैं कि आप बेहतर कार्य करें लेकिन सच यह है कि वो यह नहीं चाहते कि आप उनसे बेहतर करें।

वर्तमान काल में ऐसा निर्माण नहीं हो रहा है। नवागढ़ में होने वाले निर्माण कार्य में जो भी खनन हो रहा है उसमें पूर्णतः सावधानी रखी जा रही है, जिससे कोई विशेष कला कीर्ति क्षतिग्रस्त ना हो। डॉ. एस.के. दुबे झांसी के निर्देशनानुसार यहाँ पर जहाँ भी खनन कार्य होता है, उसमें यह सावधानी रखी जाती है। विगत दिनों रूपसिंह गुर्जर के यहाँ खनन में पार्श्वनाथ भगवान की खंडित प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जो अत्यंत मनोग एवं विलक्षण तथा प्राचीन है।

अत्यंत गौरवशाली इतिहास

यहाँ आने वाले अन्वेषण दलों के माध्यम से कई प्रकार की प्राचीन धरोहरों का अन्वेषण किया गया है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी में इतिहास तथा पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी वाराणसी एवं एस.एस. सिन्हा वाराणसी यहाँ का गहन निरीक्षण कर चुके हैं। इस दौरान आपने बताया था कि नवागढ़ (नंदपुर) गुप्तकालीन स्थापित नगर है जिसका विकास प्रतिहार काल एवं चंदेल काल में हुआ है। महोबा से लेकर देवगढ़ तक यह पूरा का पूरा बुद्देलखंड ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के गांव-गांव में विलक्षण कलाकृतियाँ एवं भारतीय कला संपदा का अक्षय भंडार है। आवश्यकता है तो बस अन्वेषण की।

नवागढ़ की विशेषता

नवागढ़ क्षेत्र कमेटी के प्रचार मंत्री डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि नवागढ़ में होने वाले अन्वेषण यहाँ की समृद्ध संस्कृति, इतिहास, राजनीतिक संबद्धता यहाँ के ग्रामीण जनों की खुशहाली को दर्शाते हैं। ना जाने कितने क्षेत्र में फैला होगा यह नवागढ़, जहाँ आज तरह-तरह के साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं। ऊमरगढ़ से फलहोड़ी बड़ ग्राम तक सांस्कृतिक धरोहर फैली पड़ी है, आवश्यकता है सतर्कता पूर्वक अन्वेषण करने की। नवागढ़ में 1959 से अब तक 114 प्राचीन प्रतिमाएं खुदाई में मिली हैं, इस पर आज भी पीएचडी हो रही है। जिलाधिकारी मानवेन्द्र सिंह भी जब पिछले वर्ष नवागढ़ के पुरावैभव और ऐतिहासिकता से रुबरु हुए तो इसे भारतीय संस्कृति की बेमिसाल धरोहर बताया था, इसलिए वह हमेशा इस क्षेत्र के विकास के लिए तत्पर रहते हैं। हाल ही में उन्होंने नवागढ़ से झांसी परिवहन निगम की बस सेवा भी शुरू करवाई है।

अन्वेषक दलों के अनुसार नवागढ़ ऐसा क्षेत्र है जहाँ जैन मूर्तियों में उपलब्ध अभिलेख के माध्यम से प्राचीनता सिद्ध हो रही है, वहीं मूर्ति शिल्प के माध्यम से भी यहाँ के इतिहास के साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं। फाइटोन पहाड़ी के निकट जैन पहाड़ी में स्थित संघ साधन स्थल, गुफाओं में उकेरी गई आकृति एवं चरण चिन्ह यहाँ की जैन विरासत का साक्षात्कार कराते हैं। रॉक पेंटिंग, कपमार्ग, हैंगिंग रॉक, बैलेंस रॉक, मैटेलिक साउंड रॉक इसके विशेष पर्यटन स्थल होने का साक्ष्य हैं। भारतीय सांस्कृतिक पहचान संजोये हैं नवागढ़।

नवागढ़ पर हो रही है दिल्ली में पीएचडी

क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार निशांत ने बताया कि नवागढ़ के अभिलेखों के माध्यम से श्रीमती अर्पिता रंजन, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग



फाइटोन पहाड़ी का अन्वेषण करते विद्वान

लाल किला दिल्ली में कार्यरत हैं, नवागढ़ पर शोध कार्य कर रही हैं। वे अनेक बार इस कार्य के लिए नवागढ़ आ चुकी हैं। आप यह शोध प्रबंध वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा से कर रही हैं। आप यहाँ दर्शन हेतु आई थी। आपने यहाँ की धरोहर देखकर इस पर शोध प्रबंध लिखने का संकल्प किया और आप आज इस कार्य में संलग्न रहकर अपने आपको धन्य कर रही हैं। शोध प्रबंध हेतु डॉक्टर संजय मंजुल, लाल किला दिल्ली, निदेशक सर्वेक्षण विभाग का विशेष सहयोग है। आपके माध्यम से ब्रह्मचारी निशांत जी ने अन्वेषण के कई आयाम स्थापित किए हैं, जिनके बारे में श्रीमती अर्पिता रंजन अपने शोध प्रबंध में उल्लेख करेंगी।

नवागढ़ के प्रागौतिहासिक साक्ष्य

डॉ. गिरिराज कुमार जनरल सेकेटरी रॉक आर्ट सोसायटी ऑफ इंडिया आगरा ने इस क्षेत्र के 10 किलोमीटर में स्थित विभिन्न पहाड़ियों का सतत अन्वेषण करते हुए 2 लाख से 5 लाख वर्ष प्राचीन प्री मिडिल एवं पोस्ट मेचुलियन काल के पाषाण के औजार खोज निकाले जो आज भी नवागढ़ के संग्रहालय में संग्रहित है। प्रख्यात मनीषी डॉ. जयकुमार मुजफ्फरनगर ने नवागढ़ के दर्शन व अवलोकन कर इसे भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर बताया। उन्होंने कहा कि ऐसी विलक्षण पुरा सम्पदा अन्य कहीं देखने में नहीं आई। अभी यहाँ और अन्वेषण की आवश्यकता है, प्रशासन के इस ओर ध्यान देने से कई रहस्य उद्घाटित हो सकते हैं।

विशेष आमंत्रण

नवागढ़ प्रबंधकारिणी समिति ने अपील की है कि इतिहास विधाओं के शोधकर्ताओं लिए पर्यटन, सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक धरोहर एवं बुद्देलखंड की सभ्यता के विकास में रुचि रखने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए नवागढ़ एक विलक्षण तीर्थ, कला तीर्थ, धर्म तीर्थ है जहाँ उनके अन्वेषण हेतु विशेष सामग्री उपलब्ध है। नवागढ़ कमेटी आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करते हुए आमंत्रित करती है। पथरों और भारतीय संस्कृति के इस गौरवशाली तीर्थ के इतिहास से रुबरु होकर विशेष आयाम स्थापित करें।



भगवान् ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को अवदान

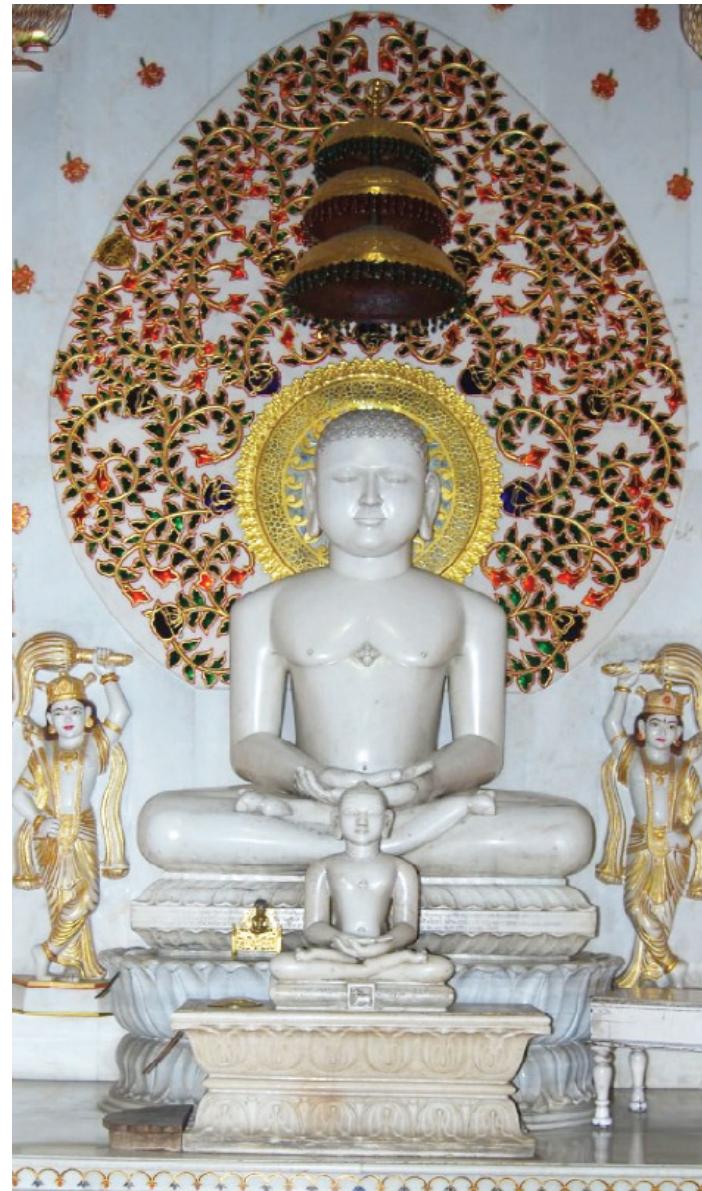


» सुभाष सिंहई

सीनियर मैनेजर (से.नि.), पी.एन. बैंक कटनी (म.प्र.)

भगवान् ऋषभदेव का जन्म ही भारतीय संस्कृति के लिए बहुत बड़ा अवदान है। भारतीय संस्कृति के अवदान को समझने के पूर्व ऋषभदेव के जन्म से पारंभ के जीवन को समझना आवश्यक है। ऋषभदेव की उत्पत्ति का इतिहास भोगभूमि का अंत एवं कर्मभूमि का प्रारंभ माना जाता है। उन्होंने मानव समाज का नया इतिहास रचा। मानव समाज को कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान दिया। नैतिक मार्ग के द्वारा सुख-शांति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया, यही है भगवान् ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को योगदान या अवदान।

प्रथम तीर्थकर भगवान् ऋषभदेव का जन्म ही भारतीय संस्कृति के लिए बहुत बड़ा अवदान है। भारतीय संस्कृति के अवदान को समझने के पूर्व ऋषभदेव के जन्म से प्रारंभ के जीवन को समझना आवश्यक है। ऋषभदेव के जन्म के समय नागरिक सभ्यता का विकास नहीं था। अधिकांश भूमि घास और सघन वृक्षों से आच्छादित रहती थी। गाय, भैंस, शेर आदि पशु अधिक पाए जाते थे। उन्हीं के बीच मनुष्य रहते थे। उनकी क्षुधा की पूर्ति वृक्षों में लगे फल-फूल आदि खाने से होती थी। अर्थात् उनकी सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति वृक्षों के द्वारा हो जाया करती थी। जिन्हें 'कल्प वृक्ष' कहा जाता था। माँ-बाप, पुत्र और पुत्री को जन्म देकर मर जाते थे। पुत्र और पुत्री बड़े होकर पति-पत्नी के रूप में रहने लगते थे। यह था भोग भूमि का काल। समय बीता गया, भोग भूमि का काल समाप्त होने लगा। कल्पवृक्षों



से आवश्यकतानुसार सामग्री मिलना बंद होने लगी। लोग एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगे। जंगली पशु-पक्षी परेशान करने लगे तब 'कुलकरों' ने प्रजा को कर्मभूमि की जानकारी देकर चिंतित मनुष्यों को प्रकृति के परिवर्तन के विषय में बताया।

अयोध्या नगरी उस दिन धन्य हो गई जब चौदहवें कुलकर राजा नाभिराज की धर्मपत्नी मरुदेवी ने चंचल, हृष्टपुष्ट, बालक ऋषभ को जन्म दिया। युवावस्था को प्राप्त कर ऋषभदेव शासक बने। उन्होंने जनता को जीवन जीने की कला सिखाई, हिंसक पशुओं से रक्षा करने का उपाय बताया, पशुओं को पालना सिखाया।

बाल-बच्चों को पालना, संगठित रहना, खेती करना, आग उत्पन्न करना, ईख (गन्ने) को दबाकर रस निकालने आदि कलाओं की आपने शिक्षा दी। इस तरह असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प की शिक्षा देकर जीवन जीने का रास्ता बताया। आपने नगर बसाये, देश को जनपदों में विभाजित किया। पूरी जनता को तीन वर्णों में बाँटा- प्रथम क्षत्रिय, द्वितीय

वैश्य और तृतीय शूद्र। जिन्हें राष्ट्र, धर्म और समाज की रक्षा का दायित्व दिया वे 'क्षत्रिय' कहलाए। जिन्हें खेती, व्यापार, गौ-पालन आदि का कार्य दिया वे 'वैश्य' कहलाये और जिन्हें सेवा का दायित्व दिया वे शूद्र कहलाए।

ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थीं- एक का नाम था सुनंदा और दूसरी का नाम था नंदा। दोनों ने 100 पुत्र और दो पुत्रियों को जन्म दिया। रानी सुनंदा ने भरत नाम के पुत्र एवं ब्राह्मी नाम की पुत्री को जन्म दिया। रानी नंदा ने बाहुबली और सुंदरी को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया। ऋषभ देव ने सभी पुत्रों को हर प्रकार की शिक्षा से प्रशिक्षित किया। अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को क्रमशः अंक और अक्षर विद्या सिखाकर समस्त कलाओं में निपुण किया। ब्राह्मी लिपि का प्रचलन तभी से हुआ है और नागरी लिपि को विद्वान लोग उसी का विकसित रूप मानते हैं।

ऋषभदेव ने जो वर्ण भेद स्थापित किया था। उसका अर्थ मानव मानव के बीच ऊँच-नीच या छोटे बड़े का भेद नहीं था। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती ने ब्राह्मण वर्ण (विप्र) को जन्म दिया। उनका मानना था कि क्षत्रिय वर्ण राष्ट्र, धर्म, समाज की रक्षा कर दुष्टों का निग्रह-संतों पर अनुग्रह करता था। वैश्य न्यायपूर्वक अर्थोपार्जन द्वारा धन कमाता था और समय आने पर अपने जीवन की समूची कमाई 'लोकहिताय जनहिताय' लगाने को तत्पर रहता था।

शूद्र बनकर जनता की सेवा करना अपना परम सौभाग्य समझता था। उस समय हर व्यक्ति में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के गुण पाए जाते थे। क्योंकि वह धन, विद्या, सेवा, शक्ति के द्वारा स्वयं और पर का हित पूर्ण करता था। वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, कर्म गुण के आधार पर थी। यहीं से भारतीय संस्कृति ने उन्हें युगदृष्टि, विश्वकर्मा, युगाधार, युग रक्षक, प्रजापति आदि विशेषणों से स्वीकार किया था। उन्होंने सिर्फ जीने की कला ही नहीं सिखाई, बल्कि प्राणियों को आत्मा के अभ्युदय और कल्याण-उत्थान का मार्ग भी बताया था। मानव धर्म के रूप में उन्होंने सत्य, अहिंसा, अनेकांत, समतावाद की शिक्षा दी थी। अहिंसा के द्वारा राग, द्वेष, अहंकार, अन्याय और अत्याचार पर विजय प्राप्त करने की कला सिखाई। अहिंसा से अनुचित भेदभाव को मिटाकर समन्वयवाद और वाद-विवाद में समाधान का रास्ता निकालने की बात उन्होंने बताई। आपने कर्म-सिद्धांत की जानकारी देते हुए बताया कि जो जैसे कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। सुख और दुःख देने वाला कोई और नहीं प्राणी के अपने स्वयं के कर्म ही हैं। कर्मों का निर्माण विचारों से होता है। अतएव भूलकर भी ऐसे कर्म नहीं करना चाहिए।



जिससे स्वयं का और पर का पतन हो। जब तक आत्मा में दया और क्षमा की भावना जागृत नहीं होती, तब तक त्याग और उदारता नहीं आती है। क्षमाभावना अहिंसक में ही पाई जाती है। अहिंसा वीरता का श्रेष्ठ आभूषण है। आत्मोद्धार अर्थात् आत्म विकास के लिए अहिंसा अनिवार्य है। ऋषभदेव का युग अहिंसा का युग होने के कारण स्वर्ण युग माना गया है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और अनेकांत की विशद विवेचना करते हुए आपने मोक्ष मार्ग की जानकारी देते हुए बताया कि सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र 'मोक्षमार्ग' की तीन सीढ़ियाँ हैं। दूसरे शब्दों में श्रद्धा, ज्ञान और आचरण के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता है। इन्हें रत्नत्रय भी कहते हैं। इसे समझने के लिए उदाहरण- पर्याप्त है, वह है लकड़ी की सीढ़ी। लकड़ी की सीढ़ी या नसैनी में दो बांस के लंबे टुकड़े होते हैं। दोनों बांसों के बीच समानांतर दूरी पर आड़ी लकड़ियाँ या तो बाँधी जाती हैं या बाँस में छेदकर फँसाई जाती हैं। दो बांस और एक आड़ी लकड़ी के सहरे

बनती है 'नसैनी', जिस पर चढ़कर हम ऊपर मंजिल तक पहुँच जाते हैं। दोनों ओर के बांस सम्यक् दर्शन और सम्यक् ज्ञान के प्रतीक हैं तथा बीच की आड़ी लकड़ी सम्यक् चारित्र का प्रतीक है। इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि मोक्षमार्ग के लिए रत्नत्रय आवश्यक है।

राजदरबार में प्रजापति महाराज ऋषभदेव नीलांजना नामक नृत्यांगना का नृत्य

देख रहे थे। अचानक नीलांजना का स्वर्गावास हो जाता है। देवतागण तुरंत उसके स्थान पर अन्य नृत्यांगना को प्रस्तुत कर देते हैं। फिर भी महाराज को सच्चाई समझने में देर नहीं लगती है। वे समझ गए कि जीवन नश्वर है, क्षण भंगर है। उन्हें वैराग्य हो गया। राज्य अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत पड़ा तथा जो चक्रवर्ती हुए देकर मुनिव्रत धारण कर एक हजार वर्षों तक कठिन तपस्या कर केवल ज्ञान प्राप्त किया। अपने सभी विकारों पर विजय प्राप्त करने के कारण 'जिन' कहलाए और उनके द्वारा धर्म जैन-धर्म कहलाया। उसी समय से जैन धर्म मानव धर्म के रूप में स्थापित हो गया जो समय-समय पर अन्य तेइस तीर्थकरों के द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित किया जाता रहा है।

ऋषभदेव की उत्पत्ति का इतिहास भोगभूमि का अंत एवं कर्मभूमि का प्रारंभ माना जाता है। उन्होंने मानव समाज का नया इतिहास रचा। मानव समाज को कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान दिया। नैतिक मार्ग के द्वारा सुख-शांति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया, यही है भगवान् ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को योगदान या अवदान।



चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी का श्रमण परंपरा में योगदान



» डॉ. शैलेष जैन

बी.ए., एम.एस., एम.डी. (मेडिसिन)
एसोसिएट प्रॉफेसर, भोपाल
स्थायी पता- कटनी (म.प्र.)

आचार्यश्री का जन्म ऐसे समय हुआ है जब समस्त समाज इस युग के प्रथम तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित श्रमण परंपरा के लिए तरस गया था। ऐसे समय में इस महान आचार्य महात्मा का जन्म लेना मानो घोर अंधेरे में ढीपक दिखाना था। आज उन्हीं के द्वारा पुनर्जीवित दिगम्बरत्व श्रमण परंपरा से हम पुण्यार्जन कर रहे हैं।

श्रमण परंपरा के उन्नयन में आचार्य मुनि, ऐलक, क्षुल्लक, आर्थिका माता एवं विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान है। बीसवीं शती में जब दिगम्बर साधु परंपरा लुप्त जैसी दिख रही थी, आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने अपनी चतुर्थ काल जैसी कठिन तपस्या से पंचम काल की उस कहावत को 'कि पंचम काल में दिगम्बर साधु बनना कठिन है' नकार दिया। श्रमण परंपरा में आचार्यश्री का क्या योदान है जानने के लिए उनके तपस्वी जीवन की साधना को जानना आवश्यक है।

कर्नाटक प्रांत के बेलगाँव जिले के चिकोड़ी तहसील में वेदगंगा और दूध गंगा नामक नदियों के संगम पर बसा ग्राम कुंभोज (भोजग्राम) धार्मिक संस्कारों और कर्तव्य परायणता से ओतप्रोत गाँव है। जहाँ भीमगोणा नाम के जर्मींदार रहते थे, ने भीम की तरह पहलवान, अर्जुन जैसा पाक्रमी, पुरुषार्थी, क्षत्रिय मानगोणा पाटिल को 25.7.1872 को जन्म दिया था। कक्षा तीसरी तक पढ़ने के बाद 9 वर्ष की आयु में उनकी शादी छः वर्ष की कन्या के साथ कर दी गई थी जो कुछ दिनों बाद स्वर्गवासी हो गई। इस तरह इनका जीवन पूर्णतः ब्रह्मचर्ययुक्त रहा। वैसे भी बाल्यावस्था में आपने सिद्धप्रा स्वामीजी से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था तथा आठ वर्ष की आयु से



ही आचार्य आदिसागरजी से श्रावकोचित व्रत लेना प्रारंभ कर दिया था। प्रारंभ से ही आप शांत स्वभाव, गृहस्थ जीवन से निर्लिप्त भद्र परिणाम, विवाह के बाद भी बाल ब्रह्मचारी, दयालु, सत्यनिष्ठ, निर्भिक प्रकृति के व्यक्ति थे। 32 वर्ष की उम्र में आपने श्री सम्मेदशिखरजी यात्रा की थी और तभी से धी, तेल आदि रसों का आजीवन त्याग कर दिया था, जो पूर्व जन्म के वैराग्य का कारण बना। 25.1.1915 को 42 वर्ष 11 माह की उम्र में क्षुल्लक दीक्षा, 15.1.1919 को 46 वर्ष पाँच माह 20 दिन में ऐलक दीक्षा एवं 47 वर्ष सात माह सात दिन में श्री 108 देवेंद्र कीर्तिजी महाराज से मुनि दीक्षा प्राप्त कर ली थी। 52 वर्ष दो माह तेरह दिन में आचार्य पद प्राप्त कर लिया था।

सन् 1948 में मुंबई सरार ने 'हरिजन मंदिर प्रवेश' कानून बनाया, जिसके अंतर्गत हरिजनों को जैन मंदिर में साधिकार प्रवेश के अधिकार प्रदत्त थे। इस नियम से अकलज जैन मंदिर में हरिजन प्रवेश भी हुआ। इस नियम के विरोध में आचार्यश्री ने अन्न-जल का त्याग कर दिया। इस नियम के विरोध में आर्ष परंपरा के संरक्षकों द्वारा मुंबई उच्च न्यायालय के दरवाजे खटखटाए गए। आचार्यश्री के प्रयासों को सफलता मिली। मुनि अवस्था में आपको 'अतिराग रोगी, आध्यात्मिक संत, सहज साधक, अभीक्षण ज्ञानेप्रयोगी' आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया था। आचार्य बनने के

बाद 'चारित्र चक्रवर्तीं, चारित्र चूड़ामणि, संयम शिरोमणि, निश्चय आराधक' आदि उपधियाँ समर्पित की गईं। आपने अपने जीवन में 331 माह 27 दिन अर्थात् 27 वर्ष 60 दिन उपवास कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने जीवन काल में आपने लगभग 9 करोड़ णमोकार महामंत्र की जाप देकर अनादि निधन-महामंत्र के महत्व को सुप्रतिष्ठापित किया है। उनका मानना था कि धर्म-रहित सौ वर्ष के जीवन से धर्म-सहित एक दिन का जीवन श्रेयस्कर है। उनका कहना था- "जब प्राणी संमय नहीं पाल सकता तब इस शरीर के रक्षण द्वारा असंयम का पोषण क्यों किया जाए।" व्रत भ्रष्ट होकर जीना मृत्यु से भी बुरा है। व्रत रक्षण करते हुए मृत्यु का स्वागत परम उज्ज्वल जीवन तुल्य है।

वैसे तो आचार्यश्री के जीवन का प्रतिपल कष्टप्रद और परीक्षा जनक रहा है। फिर भी कुछ घटनाएँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिससे स्पष्ट होगा कि किस तरह उन्होंने निर्भिकता पूर्वक उपसर्गों को शांतभाव से सहन किया था। यथा-

एक दिन आचार्यश्री एक मंदिर में एकांत में बैठकर निद्रा-विजय-तप के लिए ध्यानस्थ थे। मंदिर जंगल में था। पुजारीजी के द्वारा दीपक जलाने पर कुछ तेल आचार्यश्री के पास गिर गया। तेल के कारण लाल चीटियाँ निकल आईं और आचार्यश्री के शरीर पर चढ़ गईं तथा शरीर को काटकर लहुलहान कर दिया। प्रातः पुजारी सहित ग्रामवासियों ने आचार्यश्री की हालत देखी, वे ध्यान मुद्रा में थे, शरीर से खून बह रहा था। लोगों ने आसपास शक्कर डाली तब चीटियाँ उतर कर नीचे आईं। आचार्यश्री शांत रहे। इस तरह उन्होंने कर्मों की निर्जरा की। दूसरी घटना- आचार्यश्री जंगल में एक गुफा में ध्यानस्थ थे। अचानक 7-8 हाथ लम्बा सर्प- ताम्र लाल रंग की आँखें दिखाते, फन फैलाए उनके सामने खड़ा था। उसकी लपलपाती जीभ मानो विष के अंगारे उगल रही थी। आचार्यश्री भयभीत नहीं हुए और यह घटना पं. सुमेरचंदंजी दिवाकर को सुनाई, तब पंडितजी ने पूछा आचार्यश्री आपको डर नहीं लगा, तो उन्होंने कहा कि यदि मैंने पूर्वजन्म में या कभी उसका कुछ बिगड़ा होगा तो वह मुझे परेशान करेगा अन्यथा चुपचाप चला जाएगा। तीसरा प्रसंग- किसी श्रावक को कुष्ट रोग हो जाने के कारण वह आत्महत्या करने जा रहा था। उसने उसे समझाकर मन लगाकर एकीभाव-स्तोत्र का पाठ करने को कहा। उन्होंने दिन में तीन बार पाठ किया। चार- सप्ताह में पूरा कुष्ट ठीक हो गया। किंतु सिर पर थोड़ा सा दाग रह गया, जिसे आचार्यश्री को दिखाकर पुनः आशीर्वाद माँगा। आचार्यश्री ने उस दाग पर हाथ फेरा- दाग गायब हो गया। यह भी उनकी ऋद्धि-सिद्धि का परभाव और एकीभाव-स्तोत्र पर श्रद्धा।

और है एक संदर्भ

एक श्रावक के घर में आचार्यश्री के आहार हो रहे थे। चावल के साथ दूध चलना था। श्रावक ने गरम दूध की गंजी कपड़े से पकड़कर उबलता हुआ दूध उनकी अंजली में पलट दिया। गरम दूध अंजली में आते से असहनीय पीड़ा से आचार्यश्री बेहोश होकर जमीन पर बैठ गए। पूज्य मुनिश्री नेमिसागरजी उस समय गृहस्थावस्था में थे, वे आचार्यश्री को संज्ञाशीत देखकर घबरा गए और अंतिम समय समझकर णमोकार महमंत्र सुनाने लगे। कुछ देर में बेहोशी खत्म हुई। लोगों की जान में जान आई। यह कष्ट भी आचार्यश्री ने हँसते-हँसते झेला।

और भी देखें एक प्रसंग

एक दिन एक श्रावक ने अपने चौके में आहार दिया, किंतु जल देना भूल गया। आचार्यश्री ने जल के लिए प्रतीक्षा की, फिर बिना जल लिए ही चुपचाप बैठ गए। तीसरे दिन भी श्रावक जल देना भूल गया जलाभाव के कारण नवें दिन आचार्यश्री की छाती में उण्ठा के कारण फफोले पड़ गए। ऐसी परिस्थिति में भी वे गंभीर बने रहे। दसवें दिन उन्होंने सिर्फ जल ग्रहण किया। साधु का आहार भी तय है यह भी कर्म निर्जरा का महान साधन है।

आचार्यश्री सिद्ध क्षेत्र द्रोणिगिरी (म.प्र.) में रात्रि तपस्या पर्वत पर करते थे। एक शाम शेर आचार्यश्री के पास बैठ गया और पूरी रात्रि बैठा रहा। ऐसा ही अवसर उन्हें सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि में मिला। ऐसे हिंसक पशुओं से ना तो आचार्यश्री डरते थे और ना ही हिंसक पशु उन पर क्रोध करते थे। यह भी क्षमा एवं वात्सल्य की भावना। अहिंसक के चरणों में सिंह का समर्पण मैत्री का प्रतीक बन गया। संत के पास पाप-ताप और दीनता का अभिश्राप नहीं ठहर पाता है।

ऐसे महान तपस्वी सत्य अहिंसा के परम पुजारी, शांति की मूर्ति, कलयुग में सत्युग की गंगा बहाने वाले आचार्यश्री का चातुर्मास 1928 में कटनी (म.प्र.) में हुआ था। उनका चातुर्मास जिस प्रांगण में हुआ था वहाँ एक सूखा वृक्ष था। चातुर्मास के दौरान वह वृक्ष हरा-भरा हो गया था, इससे आचार्यश्री की बहुत प्रभावना हुई थी। उसके बाद से हमेशा कटनी वालों को जैन साधुओं का सत्संग समागम मिलता रहता है। यह उनके आशीर्वाद का सुफल है।

उस समय दिग्म्बर मुद्रा में नगर में निकलना वर्जित था। अतएव आहार के लिए जाते समय दिग्म्बर मुनि सामने कपड़ा लगा लेते थे। किंतु आपने कपड़ा लगाने से अपने गुरु को स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा आप मुझे समाधि दे दो। मैं कपड़े का उपयोग नहीं करूँगा तब आहार के समय आजू-बाजू लोग चलते थे। उन्होंने जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार किया। किसी से डेरे नहीं।

8.9.1955 को आपने सल्लेखनापूर्वक सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरि में समाधि-मरण किया था। अंतिम उपदेश में उन्होंने बताया कि जिन धर्म का मूल सत्य-अहिंसा है। सत्य में सम्यक्त्व होता है और अहिंसा में सब जीवों का रक्षण होता है। इसलिए यही व्यवहार कीजिए।

आचार्यश्री का जन्म ऐसे समय हुआ है जब समस्त समाज इस युग के प्रथम तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित श्रमण परंपरा के लिए तरस गया था। ऐसे समय में इस महान आचार्य महात्मा का जन्म लेना मानो घोर अंधेरे में दीपक दिखाना था। इस भौतिकवादी युग में हमें देव और शास्त्र के दर्शन तो मंदिरजी में हो जाते थे किंतु गुरु जो हमारी प्राचीन श्रमण परंपरा के प्रतीक हैं, दुर्लभ हो गए थे। आचार्यश्री द्वारा जैन श्रमण संस्कार ग्रहण करने पर आज की इस 21वीं शती में उन्होंने के द्वारा पुनर्जीवित दिग्म्बरत्व श्रमण परंपरा के साधुओं, मुनि, आर्यिका माताओं के दर्शन लाभ पाकर हम पुण्यार्जन कर रहे हैं। श्रमण परंपरा के लिए उनका बहुत बड़ा उपकार है। इस दुष्याकाल में विषय भोग की सरिता बह रही है। सब उसमें डुबकी लगाना चाहते हैं। आगम भी कहता है कि इस काल की ऐसी ही प्रवृत्ति होगी। फिर भी आचार्यश्री का अपूर्व व्यक्तित्व, असाधारण रूप से संयम के भावों को जगा रहा है। यही उनका बहुत बड़ा योगदान है।



गोलापूर्व महिला इकाई कमोह ने गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी वृक्षारोपण का कार्य किया और प्रतिवर्ष जुलाई में पेड़ लगाने की शपथ ली।



गोलापूर्व महिला इकाई छिंवाड़ा की संयोजकों और सदस्यों ने मिलकर बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण किया और पौधों की सुरक्षा हेतु ट्री गार्ड भी लगाए। सभी सदस्यों ने पौधों की देखरेख का संकल्प लिया।



गोलापूर्व महिला इकाई सागर-1 एवं सागर-2 ने विचार संस्था का सहयोग कर पौधारोपण का कार्य बड़े पैमाने पर किया।

» कामयाबी उन्हीं को मिलती है जो विपरीत परिस्थितियों में भी मेहनत करना नहीं छोड़ते हैं।



गोलापूर्व महिला इकाई दमोह ने जरूरतमंद विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री वितरित की। कार्यक्रम में महासभा द्रस्टी श्री भागचंद भागेन्द्र, उपाध्यक्ष श्री विनोदजी कोतमा, श्री चक्रेश शास्त्री, मंत्री श्री दीपचंद जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। अध्यक्ष दीमा जैन ने इकाई का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।



गोलापूर्व महिला इकाई भोपाल की बैठक 23 जून को श्रीमती अर्चना शास्त्री के निवास पर हुई। मंगलाचरण आकर्षि शास्त्री ने किया। श्रीमती सुजाता जैन ने योग का जीवन में प्रभाव और सुरभि जैन ने वृक्षारोपण पर अपने विचार रखे। अंत में सभी को पौथे वितरित किये गये।



गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गोलापूर्व महिला इकाई सागर-1 एवं सागर-2 के पदाधिकारियों और सदस्यों ने आर्थिका माताजी को साझी प्रवान की।



गोलापूर्व महिला इकाई टीकमगढ़ द्वारा आहार क्षेत्र में संचालित विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभावान बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।



गोलापूर्व महिला इकाई मकरोनिया के तत्वधान में 27 जुलाई को कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के लिए श्रद्धांजलि आर्पित की गई। साथ ही हारियाली तीज पर पार्श्वगिरि में पौथारोपण किया गया।



● प्रेषक : चक्रेश शास्त्री

अ.भा. गोलापूर्व महासभा टीकमगढ़

महिला इकाई का गठन

टीकमगढ़। दिनांक 08-07-2019 को अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के महिला सभा अंतर्गत महिला इकाई टीकमगढ़ के गठन एवं आगामी कार्यकलापों बाबत अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के उपाध्यक्ष एवं महिला इकाई के संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री एवं श्री नरेंद्र कुरवाई, संगठन मंत्री श्री राजेंद्र जैन, संयुक्त मंत्री महासभा की उपस्थिति में श्री महेंद्र जैन बड़गांव महासभा के उपाध्यक्ष के निवास पर बैठक संपन्न हुई। बैठक में महिला इकाई टीकमगढ़ की इकाई में सदस्यता वृद्धि एवं अन्य गतिविधियों के संचालन हेतु निम्नानुसार संयोजिकाओं का मनोनयन किया गया है :-

- | | |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| 1- श्रीमती प्रभीला सिंघई, बड़गांव | 2- श्रीमती नीलम जैन, शिशु निकेतन |
| 3- श्रीमती एकता जैन | 4- श्रीमती राकेश जैन |
| 5- श्रीमती मधु जैन मैनवार | 6- श्रीमती आशा सिंघई |

अ.भा. गोलापूर्व महासभा मकरोनिया,

सागर महिला इकाई का गठन

सागर। दिनांक 20-04-2019 को अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के महिला सभा अंतर्गत महिला इकाई मकरोनिया सागर की कार्यकारिणी के मनोनयन एवं आगामी कार्यकलापों बाबत अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के उपाध्यक्ष एवं महिला इकाई के संयोजक द्वय श्री विनोद जैन, श्री चक्रेश शास्त्री एवं श्री सुरेन्द्र खुर्देलीय संगठन मंत्री महासभा की उपस्थिति में श्री उत्तमचंद जी निवार वालों के निवास मकरोनिया सागर में बैठक संपन्न हुई। बैठक में महिला इकाई मकरोनिया सागर की कार्यकारिणी में निम्नानुसार मनोनयन किया गया है

संरक्षक

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| 1- श्रीमती मीना प्रधान | 2- श्रीमती उषा फुसकेले |
| 3- श्रीमती प्रभा जैन टी आई | 4- श्रीमती कस्तूरी बहिन जी |
| 5- श्रीमती मणि जैन | |

पदाधिकारी :

- | | |
|--|-------------|
| 1- श्रीमती संध्या जैन / श्री उत्तमचंद जैन | अध्यक्ष |
| 2- श्रीमती मीना जैन / विनोद जैन | उपाध्यक्ष |
| 3- श्रीमती मुक्ता जैन / शैलेष जैन | मंत्री |
| 4- श्रीमती आरती जैन / श्री संतोष जैन | कोषाध्यक्ष |
| 5- श्रीमती सरिता जैन / श्री आलोक जैन | उपमंत्री |
| 6- श्रीमती प्रीति शास्त्री / श्री प्रदीप शास्त्री (सांस्कृ.प्र.) | कार्य.सदस्य |
| 7- श्रीमती रानी जैन / श्री सचिन जैन (सांस्कृ.प्र.) | कार्य.सदस्य |
| 8- श्रीमती सीमा जैन/ श्री पी सी जैन | कार्य.सदस्य |
| 9- श्रीमती सुषमा जैन / श्री सुरेन्द्र जैन | कार्य.सदस्य |
| 10- श्रीमती सुनीता राधेलिया / श्री संदीप जी | कार्य.सदस्य |

प्राप्त सहयोग दायि

- श्री राजेन्द्र कुमार जैन शाहगढ़ की ओर से सुपुत्री शिखा जैन के विवाह उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 500 रु.
- श्री राकेश शाह सागर की ओर से पुत्र सचिन शाह के विवाह उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 1100 रु.
- श्री अजित कुमार कोतमा की ओर से पुत्र अरविंद के विवाह उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 500 रु.
- श्री महेश कुमार जैन (पटमोना वाले) सागर की ओर से पुत्री मिंकी जैन के विवाह उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 500 रु.
- श्री मुकेश जैन पटमोना वाले, सागर की ओर से पुत्री स्वीटी जैन के विवाह के उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 500 रु.
- श्री बाबूलाल जैन रीवा की ओर से पुत्र अनुराग जैन के विवाह उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 1100 रु.
- श्री पदम कुमार जैन आरटीओ सागर की ओर से पुत्र जलज की सराई के उपलक्ष्य में प्राप्त राशि : 2750 रु.
- श्री समीर जैन सागर की ओर से स्व. श्री सुरेशचंद्रजी जैन की स्मृति में प्राप्त राशि : 501 रु.

स्मृति शेष

- श्रीमती ज्ञानीबाई जैन ध.प. श्री चौ. नन्हेलाल जैन (शिक्षक) गढ़कोटा
- श्रीमती गुणमाला जैन ध.प. श्री ज्ञानचंद जैन (निवार वाले)
- श्रीमती कस्तूरीबाई जैन देवरी
- श्री राजेन्द्र कुमार जैन (कटनी वाले), सागर
- श्री जीवनलालजी जैन (बिदवांस वाले) गौरझामर
- श्री सुधीर कुमार जैन सुपुत्र प्रो. भागचंदजी भागेन्द्र, दमोह
- श्रीमती ध.प. बालचंदजी चौधरी, सतना
- श्रीमती शांतिबाई सिंघई, खुर्देलिया, सागर
- श्रीमती काशीबाई जैन ध.प. स्व. बाबूलालजी जैन बेरी वाले (सेसई वाले), सागर
- श्री सिं. कोमलचंद जैन, खुर्देलिया, सागर

सात स्थानों पर क्रोध नहीं करना चाहिये

- बाहर जाते समय किये गये क्रोध में बोले गए शब्द कुछ भी अनर्थ कर सकते हैं।
- घर में प्रवेश करते ही थके होरे इंसान पर क्रोध नहीं करना चाहिये।
- भोजन करते समय किये गये क्रोध से भोजन जहर हो जाता है।
- सोते समय कभी क्रोध करके नहीं सोएँ।
- घर में उपकारी लोगों के साथ कभी क्रोध नहीं करें।
- धर्म स्थान में कभी क्रोध नहीं करें।
- जिसको हम देख नहीं सकते उन पर क्रोध नहीं करें।



भारतीय संविधान में पशु संरक्षण



भारतीय संस्कृति में गाय को माता का स्थान दिया गया है। प्राचीन भारत हमारी संस्कृति के प्रमुक अंग रहे हैं। आज मूक प्राणियों का वध न केवल मांसाहार के लिए किया जा रहा है, अपितु फैशनपरस्ती और विदेशी मुद्रा कमाने के लिए भी मूक प्राणियों की हत्या की जा रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार भूकम्प का एक कारण पशुवध भी है। सरकार को भी विदेशी मुद्रा का लालच कल्पनाने खोलने के लिए उकसाता है। लगभग हर पार्टी वादा करती है कि उनके नेतृत्व में चलने वाली सरकार के राज में गौवध बंद हो जाएगा। लेकिन होता कुछ नहीं। पशुवध के कारण हमारी प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। गौवंश से हमें न केवल घी, दूध, दही आदि मिलता है अपितु हमारी कृषि का मूलाधार यही है। उसके गोबर और मूत्र तक उपयोगी हैं। सप्नाट अकबर ने गौवध पर प्रतिबंध लगा दिया था।

जुलाई, 2002 के अंतिम सप्ताह में आई 'गो पशु आयोग' की रिपोर्ट में आयोग ने भारत सरकार से सिफारिश की है कि संविधान में संशोधन कर गो रक्षा को मौलिक अधिकारों की सूची में शामिल किया जाए। इस बात के लिए भी संविधान में संशोधन हो कि संसद एक केंद्रीय कानून बनाए जिससे गो वध पर कानून रोक लगाई जा सके। आयोग ने गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करने की सिफारिश करते हुए यह भी कहा है कि गौवध को संवैधानिक अपराध घोषित किया जाए।

हमारे संविधान में प्राणिमात्र के प्रति करुणा के साथ-साथ गौवंश के वध का प्रतिषेध सरकार की जिम्मेदारी है। पर जो स्थिति है उससे पाठक भलीभांति परिचित हैं। जैन आचार्य करुणा और दया की प्रतिमूर्ति होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से उन्होंने गौवंश के संरक्षण का बीड़ा उठाया है, विशेषतः मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में हजारों की संख्या में गौशालाएँ जैनाचार्यों की प्रेरणा और उपदेश से संचालित है। मांसाहार का निर्यात रोकने के लिए भी जैन समान ने अहिंसक आंदोलन चलाकर जन-जागरण किया है। आज प्रत्येक भारतीय विशेषतः अहिंसक समाज का कर्तव्य है कि सरकार को गौवध पर प्रतिबंध लगाने के लिए बाध्य करें तथा इससे संबंधित भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 (छ) व (झ) की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करें। इस विषय में अन्य अनुच्छेद निम्न हैं-

अनुच्छेद 48 : कृषि और पशुपालन का संगठन : राज्य कृषि और पशु पालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों से संगठित करने का प्रयास करेगा और विशिष्टतया गायों और बछड़ों तथा अन्य दुधारु और वाहक पशुओं की नस्लों के परिरक्षण और सुधार के लिए और उनके वध का प्रतिषेध करने के लिए कदम उठाएगा।

अनुच्छेद 48, क : पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन और वन

तथा वन्य जीवों की रक्षा : राज्य देश के पर्यावरण के संरक्षण तथा संवर्धन का और वन तथा वन्य जीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा।

अनुच्छेद 47 : पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करने तथा लोक स्वास्थ्य का सुधार करने का राज्य का कर्तव्य : राज्य अपने लोगों के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करने और लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्तव्यों में मानेगा और राज्य विशिष्टतया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के औषधीय प्रयोजनों से भिन्न, उपयोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।

अहिंसा को प्रोत्साहन

यहाँ हम उच्चतम न्यायालय के एक महत्वपूर्ण निर्णय का भी उल्लेख करना चाहेंगे जिसमें जैन धर्म प्रतिपादित अहिंसा का प्रतिरूप दिखाई देता है। पुरुषार्थसिद्धि में आचार्य अमृतचंद्र ने कहा है कि एक हिंसा करता है और अनेक हिंसा का फल भोगते हैं।

'एक: करोति हिंसा हिंसा फलभागिनो भवन्ति वहवः'

हाल ही में 16 अप्रैल, 2002 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने इसी प्रकार का एक निर्णय दिया है कि- अगर कोई बलवाई भीड़ किसी पर सुनियोजित ढंग से हमला करती है तो मुकदमे की सुनवाई करने वाली अदालत यह निष्कर्ष निकाल सकती है कि भीड़ में शामिल हर व्यक्ति की मंशा हमले की थी। जहाँ हमला सोचा-समझा हो वहाँ हमलावर भीड़ की एक सी मंशा हो सकती है।

न्यायमूर्ति आर.पी. सेठी और न्यायमूर्ति दुर्व्व श्वामी राजू की खंडपीठ ने यह व्यवस्था दी है। एक परिवार के छह लोगों की सामूहिक हत्या के अभियुक्तों की अपीलों को खारिज करते हुए अदालत ने एक सी मंशा का निष्कर्ष निकाला है। बिहार के अमरपुर गाँव में ये हत्याएँ 1994 में की गई थीं। तीन-चार सौ लोगों की भीड़ ने भोली सिंह के घर धावा बोला और उसे मौत के घाट उतार दिया था, साथ ही परिवार के दूसरे सदस्यों को जिंदा जला दिया था। भीड़ ने सैकड़ों राउंड गोलियाँ भी चलाई थीं। इस मामले में 19 लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया था। अपने बचाव में अभियुक्तों ने अदालत में दलील दी कि वे तो महज तमाशबीन थे। उन्होंने कोई अपराध नहीं किया था। उनका तर्क था कि अभियोजन पक्ष उनके खिलाफ एक सी मंशा साबित करने में असमर्थ रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने इस दलील को नामंजूर करते हुए अभियोजन का बचाव किया और कहा कि जहाँ भीड़ हमलावर हो, वहाँ भीड़ में शामिल प्रत्येक व्यक्ति के कृत्य को अलग-अलग पहचान पाना बड़ा मुश्किल होता है। लेकिन जहाँ भीड़ में शामिल हर व्यक्ति को मालूम हो कि आगे क्या होने वाला है, वहाँ एक सी मंशा होने के कारण आरोप से बचा नहीं जा सकता। अदालत ने कहा कि इस बात के प्रमाण उपलब्ध हैं कि अभियुक्त हमलावर भीड़ में शामिल थे।



धर्म की शोधक-रेचन क्रियाएँ



» के.एल. संघी

‘भाव’ कहाँ पैदा होते हैं? इनका स्रोत कहाँ है? यह सूक्ष्म रहस्य और समस्या है। शरीर शास्त्रियों ने केवल शरीर के आधार पर उपाय खोजे और मानस शास्त्रियों ने मन और मस्तिष्क के उपाय खोजा किंतु उभी भी यह समझ के परे है कि भाव कहाँ से पैदा हो रहे हैं और इनका स्रोत कहाँ है। इन प्रयोगों से अंतःविरोधी बातें भी आती हैं- आदमी भी अन्तविरोधों में जीता है- वह कहता कुछ और करता कुछ है। अध्यात्म के मार्ग में ऐसे अन्तविरोध नहीं होते। यह स्पष्ट और निर्द्वंद्व मार्ग है। यह मार्ग केवल शोधन और रेचन की प्रक्रिया है। कुछ चिंतकों ने अध्यात्म को दमन की प्रक्रिया का संवहक कहा है। यह अभिप्राय न तो सही है और न ही भारतीय संस्कृति में अध्यात्म के मानने योग्य है। धर्म के शोधक और रेचक क्रियाओं को निम्न चार पद्धतियों से समझना होगा। यह है स्वाध्याय, ध्यान, भाव विशुद्धि और तप।

स्वाध्याय

यह एक पद्धति है, जिसमें भावों को एक दिशा निर्धारित की जा सकती है। अच्छा विचार और चिंतन के लिए प्रमाणित धर्म साहित्य का पठन-पाठन से भावों को बदला जा सकता है। यह शोधन का एक उपाय है। यह कितना प्रभावी होगा यह तो व्यक्ति विशेष के उपयोग की क्षमता पर निर्भर करता है। पढ़ना मात्र स्वाध्याय नहीं है। पढ़ने के साथ उसका चिंतन-मनन होना चाहिए। जब तक स्वाध्याय के साथ चिंतन-मनन नहीं जुड़ता, तब तक स्वाध्याय लाभप्रद नहीं होता। आज पढ़ने और धर्मसभाओं में प्रवचन सुनने की संख्या में निश्चित ही बढ़ोतारी हुई है। परंतु चिंतन और मनन की स्थिति अपेक्षाकृत नहीं है। मनन की अवधि लम्बी होती है। मनन जो प्राप्त होता है वह निश्चित ही हमारे भाव परिवर्तन के लिए प्रभावी हो सकता है। उपदेश सुनने या पढ़ने के उपरांत उसके समुचित मनन न होने से वह मात्र खानापूर्ति ही है। यह कहावत कही जाती है कि ‘मनुष्य एक कान से सुनता है और दूसरे कान से निकाल देता है जबकि महिला दोनों कानों से सुनती है और तत्क्षण ही मुँह

से निकाल देती है।’ आज स्कूल-कॉलेजों में कोर्स इतना भारी-भरकम होता है कि उन्हें उसके मनन करने का समय ही नहीं मिलता। पुराने समय में शिक्षा पद्धति ही भिन्न थी। गुरु पाठ पढ़ाते थे और विद्यार्थी को मनन का पूरा समय देते थे। शिक्षा प्रणाली में यह क्रम था कि एक पहर पढ़ो और एक पहर पढ़े हुए पाठ की अनुप्रेक्षा/अनुचिंतन और मनन करो। स्वाध्याय परिवर्तन का घटक होना चाहिए।

ध्यान

ध्यान के द्वारा वृत्तियों का परिवर्तन और मस्तिष्क का नियमन होता है। इससे नाड़ी संस्थान और ग्रंथि संस्थान पर नियंत्रण होता है। ध्यान की प्रक्रिया से हम प्राणधारा को नियंत्रित करते हैं। प्राण और चित्त दोनों का योग है। जहाँ चित्त एकाग्र होता है वहाँ प्राण का अतिरिक्त प्रवाह होने लगता है। यही कारण है कि व्यक्ति जब एक ओर ध्यान करता है तो वह शरीर की अन्य व्याधियों से अपने आप दूर हो जाता है। सामान्यतः शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक अवरोध व्यक्ति को परेशान करता है। ध्यान ही एक ऐसी प्रक्रिया है कि व्यक्ति इनसे भी ध्यान के समय पूर्णतः मुक्त रहता है। ध्यान का अर्थ है- देखना, अवलोकन करना। इसमें चिंतन गौण और देखना मुख्य है। देखना एक शक्तिशाली क्रिया है। जो देखने की क्रिया में सजग है वह अपने आपको तत्काल बदलने में भी अग्रणी रहता है। विचार-क्रोध आए तो इन्हें देखो। देखने की एकाग्रता में विचार या क्रोध अपने आप में शांत हो जाते हैं। कल्पना, चिंतन से उत्तेजना बढ़ती है। केवल देखने से उत्तेजना शांत होती है।

3. भाव विशुद्धि

यह सरल नहीं है। निरंतर शुभ भाव धारा बनी रहे यह असंभव तो नहीं किंतु बिना निरंतर प्रयास और अपवित्र भाव से दूरी बनाए रखने के ढूँढ़ता से पालित संकल्पों से ही यह संभव है। भाव विशुद्धि के लिए साधु जन रच और पर के अमूल्य सिद्धान्त की दृढ़ता से पर के प्रति उपेक्षा से भावों में बुद्धि बनाए रखते हैं। आत्म चिंतन की प्रक्रिया भी भाव विशुद्धि का मूल है। व्यक्ति की भीतर की प्रक्रियाएँ अनंत हैं। इनका निर्मूलन ही भाव विशुद्धि की धारा है।

4. तप

तप का सरल अर्थ है सहिष्णुता की शक्ति का विकास। इसे कष्टों को सहने की क्षमता का विकास भी कहा जा सकता है। इसके लिए सहनशीलता का अपने में विकास भी कहा जा सकता है।

मूलतः धर्म की शोधन और रेचन की यह क्रियाएँ इनका दिशा सूचक यंत्र हैं। इनसे वृत्तियों का मूलतः शोधन होता है, वृत्तियाँ परिष्कृत होती हैं और परिणामस्वरूप जीवन की धारा ही बदल जाती है। मस्तिष्क विकास के भी यह चार साधन हैं। यह साधन मूलतः ध्यान की प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं। ध्यान इन शेष तीन प्रक्रियाओं को स्वयं में केन्द्र बिन्दु बन कर इनका विकास करता है। ध्यान से एकाग्रता का विकास होता है और प्रतिफल के रूप में कर्मठता और सहनशीलता प्राप्त होती है। जीवन गत इस परिवर्तन के पीछे ध्यान की ही कहानी है। यदि हम समग्रता से सोचें तो ध्यान का सही मूल्यांकन होगा।

524, संजीवनी नगर, जबलपुर

(संदर्भ ग्रन्थ : अवयतन मन से संपर्क)

फार्म भेजने की
अंतिम तिथि
10 सितम्बर 2019

(फार्म की)
फोटोकापी मान्य है।

अखिल भारतवर्षीय द्विगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

द्वारा आयोजित

नवीनतम रंगीन
पासपोर्ट साइज फोटो
फोटो के पीछे
प्रत्याशी का नाम,
पिता का नाम व
स्थान लिखा हो
चर्चा करें।

द्विगम्बर जैन युवक-युवती परिचय शम्भेलन

दिनांक-12 एवं 13 अक्टूबर 2019

स्थान- श्री सिद्धकेन्द्र नैनागिरि जी (म.प्र.)

प्रधान कार्यालय: तीर्थकर परिसर, द्वितीय तल, कटरा, नमकमंडी, सागर (म.प्र.)

फोन-07582-243101, फोका. 9165232417 Website - www.golapurvajainsamaj.com E-mail: golapurvmahasabha@gmail.com

कृपया फार्म हिन्दी भाषा में स्वच्छ एवं स्पष्ट भरें तथा अंक अंग्रेजी में भरें ताकि प्रकाशन में त्रुटि न हो।

नोट:- 1. अगर आपका संरक्षक 2018 में प्रविष्टि है तो उसका क्रांतंग [] यदि आप उस प्रविष्टि में कोई सुधार चाहते हैं तो केवल वही जानकारी इस फार्म में अंकित करें।

प्रत्याशी विवरण

नाम

मोबाइल 0 []

शिक्षा

व्यवसाय/सर्विस

मासिक आय रु.

जन्म दिनांक []

जन्म तिथि (शब्दों में)

जन्म समय | जन्म स्थान

ऊँचाई: फुट [] इंच [] वजन [] कि.ग्रा.

वर्ण (रंग) (✓) करें : गौर [] गेहूँआ [] श्याम []

कुण्डली भिलान के पक्ष में - हाँ/नहीं

मंगली - हाँ [] नहीं []

उपजाति :

उपजाति बंधन: (हाँ/नहीं)

वंश- निज वंश

मामा वंश

नक्षत्र ब्लड सुप

शारीरिक दोष : (यदि हो, तो लिखें)

चयन में प्राथमिकता :

परिवारिक विवरण

पिता का नाम श्री

माता का नाम श्रीमती

पता

पिन []

फोन (STD कोड सहित)

मोबाइल/ WhatsApp 0 []

व्यवसाय/सर्विस

मासिक आय रु.

भाई/बहिन (संख्या शब्दों में लिखें)

भाई विवाहित	भाई अविवाहित	बहिन विवाहित	बहिन अविवाहित
-------------	--------------	--------------	---------------

आवास - निजी [] किराये का []

चाचा/मामा/पूर्फा एवं अन्य संपर्क सूची

1. श्री

पता

फोन (STD कोड सहित)

मोबाइल 0 []

2. श्री

पता

फोन (STD कोड सहित)

मोबाइल 0 []

वचन पत्र

मैं आवेदनकारी वचन देता/देती हूँ कि इस आवेदन पत्र में दिये गये विवरण पूर्णतः सत्य एवं सही हैं तथा इसकी प्रमाणिकता के लिये मैं स्वयं उत्तरदाती हूँ। मैंने इस आवेदन-पत्र के पीछे निर्देशित नियम एवं शर्तें पूर्णतया पढ़ लिये हैं एवं मैं उनका पालन करने हेतु प्रतिबद्ध हूँ। भ्रम अथवा विवाद की स्थिति में अ.भा.दि.जैन गोलापूर्व महासभा में प्रकाशनार्थ एवं परिचय सम्मेलन की वेबसाइट पर उपलब्ध कराने हेतु प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ। सम्मेलन के दौरान मंच से दिये प्रत्याशी के परिचय की रिकार्डिंग एवं उसके विवरण हेतु मेरी पूर्ण सहमति है।

हस्ताक्षर : प्रत्याशी

विशेष अनुरोध- हमारे बैंक खाते में सीधे नगद राशि जमा करने पर 100/- रुपये अतिरिक्त देय होगा।

हस्ताक्षर : अभिभावक

शुल्क विवरण
प्रविष्टि+पत्रिका शुल्क - 400 रुपये
संग भाई/बहिन - 200 रुपये
डाक व्यय - 50 रुपये
योग (जो लागू हो)

-: संकलनकर्ता का नाम एवं पता :-

केवल कार्यालयीन उपयोग हेतु:-

हस्ताक्षर

रसीद क.दि.रुपये

अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा आयोजित

पन्द्रहवाँ अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन

दिनांक : 12-13 अक्टूबर 2019

स्थान : श्री 1008 दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरिजी, जिला छतरपुर (म.प्र.)

फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि : 10 सितंबर 2019

फॉर्म हमारी वेबसाइट/ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं।

वेबसाइट : www.golapurvajainsamaj.com

ई-मेल : golapurvasamaj@gmail.com

-: प्रधान कार्यालय :-

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य मार्ग
कटरा, नमक मंडी, सागर-470002 (म.प्र.)

युवक-युवती परिचय सम्मेलन में सहयोग करें

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा पन्द्रहवाँ युवक-युवती परिचय सम्मेलन 12 एवं 13 अक्टूबर 2019 को श्री 1008 दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरिजी, जिला छतरपुर में संपन्न होने जा रहा है। इस भव्य आयोजन में महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन, चेतना सम्मान, समाज गौरव सम्मान, महिला सम्मेलन, क्षेत्रीय समाज को निःशुल्क नेत्र परीक्षण, चश्मा वितरण एवं जाँच कर दवा वितरण के साथ डायबिटीज एवं ब्लड प्रेशर की जाँच भी होगी।

आपके परिवार में विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा अपने क्षेत्रीय संकलनकर्ता या स्वयं भरकर समय पर जमा कराएँ। युवक-युवतियों को परिचय सम्मेलन स्थल पर मंच पर भेजने की प्रेरणा भी दें।

इस आयोजन में प्रकाशित होने वाली संस्कार पत्रिका 2019 में आप अपने परिवार की ओर से शुभकामनाएँ एवं विज्ञापन देकर महासभा को सहयोग प्रदान करें।

विज्ञापन एवं अन्य प्रकार का सहयोग

1. भोजन (एक समय का)	51000 रु.
2. स्वल्पाहार (एक समय का)	21000 रु.
3. पत्रिका विज्ञापन (द्वितीय एवं तृतीय कवर पेज)	15000 रु.
4. पत्रिका विज्ञापन (चतुर्थ कवर पेज)	25000 रु.
5. पत्रिका के अंदर पूरे पृष्ठ का विज्ञापन	5000 रु.
6. हाफ पेज विज्ञापन	3000 रु.
7. सभी पेजों पर कॉर्नर विज्ञापन	31000 रु.

सहयोगियों के नाम पत्रिका में प्रकाशित किये जाएँगे।

सम्पूर्ण पत्रिका व विज्ञापन मल्टीकलर रहेंगे।

साँसे हो रही है कम... आओ पेड़ लगाएँ हग...

कुदरत का एक अनमोल तोहफा है पेड़—पौधों को हरा सोना कहते हैं। वृक्ष जीवन के स्तंभ होते हैं, आज लगाया गया पौधा कल वृक्ष बनता है जो आने वाली पीढ़ियों को फायदा देता है।

शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति एक पीपल, एक नीम, दस ईमली, तीन केंथ, तीन आंवला, तीन बेल एक वट एवं पाँच आम के वृक्ष लगाता है वह पुण्यात्मा होता है और कभी नरक के दर्शन नहीं करता है।

आज हमें पेड़ पौधे लगाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

विश्व में प्रत्येक वर्ष लगभग 1500 करोड़ पेड़ कट रहे हैं क्योंकि हमनें आधुनिक जीवन और विलासिता हेतु पेड़ों को काटना शुरू कर दिया, पिछले दो दशक में एक अनुमान अनुसार 125 करोड़ पेड़ नष्ट हो चुके हैं। इसके प्रमुख कारण निम्न हैं—

1. 33% वृक्ष जंगलों में आगजनी का शिकार हो जाते हैं।
2. 21% वृक्ष जंगलों को खेती योग्य भूमि बनाने के कारण नष्ट होते हैं।
3. 26% वृक्ष लकड़ी के उत्पाद और विलासिता की सामग्री बनाने में नष्ट हो जाते हैं।
4. 24% वृक्ष स्थानान्तरी कृषि से
5. 6% वृक्ष शहरीकरण और अन्य कारणों से कम होते जा रहे हैं।



श्रेयांशु जैन
(मार्गदर्शक : विचार संस्था, सागर)

वर्तमान में भारत देश में 14000 करोड़ वृक्ष लगाने की नितांत आवश्यकता है। जोकि हम 521 करोड़ पेड़ ही लगा पा रहे हैं।

साथियों एक स्वस्थ वृक्ष हमारे समाज को कई लाख रूपयों की आकसीजन निःशुल्क देता है। एक पेड़ अपने 50 वर्ष के जीवन में लगभग 5 करोड़ रूपये की सेवायें निःशुल्क प्रदान करता है।

मानव प्राणी प्रत्येक दिन लगभग 2 किलो ऑक्सीजन ग्रहण करता है और एक स्वस्थ वृक्ष 3 किलो ऑक्सीजन छोड़ता है। लेकिन पेड़ों की कर्मीं की वजह से हम 7-8 पेड़ों से निकलने वाली ऑक्सीजन को ले रहे हैं। एक स्वस्थ वृक्ष 1 से 5 डिग्री तापमान कम करता है यह 22 किलो जहरीली कार्बनडाइऑक्साइड सोखता है।

एक पेड़ की मदद से सालाना 3500 लीटर पानी की बरसात होती है एवं 3700 लीटर पानी सोखकर जमीन के अंदर पहुँचाता है, शहरों में एक पेड़ 521 लीटर पानी रोकर शहर को बाढ़ से बचाता है।

ज्यादा पेड़ मतलब ज्यादा बारिश, पेड़ों की पत्तियों से वाष्पन होता है इससे हवा में नमीं बढ़ती है।

भाप का ठंडा होकर पानी में बदलना—बड़े एवं घने पेड़ हवा की नमीं को ज्यादा रोकते हैं जिससे ज्यादा बारिश होती है।

पेड़ जितना पानी सोखता है उतना उपयोग नहीं करता। अतिरिक्त पानी भाप के रूप में छोड़ता है।

पानी का रिस कर धरती में जाना—पेड़ तेज पानी को बहने से रोकते हैं जिससे ज्यादा पानी धरती में चला जाता है।

ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए दुनिया भर में 1 लाख करोड़ पेड़ लगाने की आवश्यकता है। जहां जंगल कम से है वहां बाढ़ से ज्यादा नुकसान हो रहा है। घने वृक्ष वाले स्थानों पर कई प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है। जैसे-अस्थमा और मलेरिया।

पेड़—पौधों की विश्व भर में ऐसी 50000 से अधिक प्रजातियाँ हैं जिनसे जीवन रक्षक औषधियों का निर्माण किया जाता है और भारत में ऐसे 30000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

एक पेड़ 80 किलो पॉरा, लीथियम, लेड जैसी जहरीली धातुओं को सोखकर मिट्टी में उर्वरकता पैदा करता है। घर के आस-पास सही जगह पर पेड़ लगे हो तों 25% ए.सी. और पंछे की आवश्यकता नहीं होती। आने वाला शोर-गुल 40 से 50% कम हो जाता है। एक पेड़ से पक्षियों की कई प्रजातियों को बचाया जा सकता है।

बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान सम्मानित हुए राजेन्द्र जैन 'महावीर'

सनावद। शासकीय हाईस्कूल बासवा में कार्यरत माध्यमिक शिक्षक राजेन्द्र महावीर जैन ने शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय खण्डवा में दो वर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान अनेक पुरस्कार प्राप्त किये व अपनी सकारात्मक कार्यशैली के चलते उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन हुए विदाइ समारोह में महाविद्यालय प्राचार्य श्रीमती तनुजा जोशी ने उन्हें अनेक प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए उनके कार्यों की सराहना करते हुए बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न शिक्षक बताया। श्री जैन ने महाविद्यालय में भाषण-कविता-निबंध परिचर्चा आदि प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान व अनेक कार्यक्रमों का



जोशी, राकेश यादव, डॉ. उमेश अग्रवाल, डॉ. ज्योति राठौर, डॉ. रश्मि दुधे, डॉ. मो. अ. खान, ममता यादव, कार्यालय अधीक्षक संजय अत्रे, सपना शर्मा सहित बी.एड., एम.एड. के समस्त छात्राध्यापक उपस्थित थे।

प्रभावना जनकल्याण परिषद की कार्यकारिणी ने ज्ञानसागर जी से लिया आशीर्वाद



गाजियाबाद। प्रभावना जनकल्याण परिषद (रज.) की कार्यकारिणी की बैठक श्री सुनील कुमार जैन शास्त्री टीकमगढ़ की अध्यक्षता में कविनगर गाजियाबाद में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस दौरान परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। परिषद की गतिविधियों से आचार्यश्री को अवगत कराया गया, आचार्यश्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया तथा आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के समाधि हीरक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में परिषद द्वारा विविध आयोजन करने हेतु पदाधिकारियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

इस दौरान परिषद के वर्तमान पदेन अध्यक्ष श्री सुनील जी शास्त्री सोजना का कविनगर जैन समाज के महामंत्री श्री विवेक जैन और अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन आदि ने सम्मान किया। परिषद के पदाधिकारियों ने

आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद लिया। संचालन महामंत्री डॉ. निर्मल शास्त्री टीकमगढ़ ने किया। बैठक का शुभारंभ श्री सुनील जैन प्रसन्न शास्त्री नागौद के मंगलाचरण से हुआ। शास्त्री परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन जी बड़ौत, महामंत्री ब्र. जय कुमार जी निःशांत भैया जी, संयुक्त मंत्री श्री पंडित विनोद जी रजवांस, विद्वत परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शीतल चंद्र जी प्राचार्य जयपुर, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, चेतन जैन बंडा, डॉ. सुमित जैन उदयपुर आदि ने अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। इस दौरान महामंत्री डॉ. निर्मल शास्त्री ने आचार्यश्री को परिषद की गतिविधियों से अवगत कराया। डॉ. सुनील संचय ने परिषद द्वारा किये गए उल्लेखनीय कार्यों के बारे में जानकारी दी। प्रचार मंत्री मनीष शास्त्री ने आभार व्यक्त किया।

» दर्द सबके एक हैं मगर हौसले सबके अलग-अलग। कोई बिखरकर मुस्कराया कोई मुस्कराकर बिखर गया।

कोलकाता में राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागरजी का मंगल प्रवेश



कोलकाता। श्रमण संस्कृति के अद्वितीय कोहीनूर, सम्पूर्ण भारत को अहिंसक एवं व्यसनमुक्त बनाने का सफलतम प्रयास करने वाले, श्रावक ही नहीं, श्रमणाचार्यों के हृदय में निवास करने वाले, बुंदेलखण्ड के आदर्श रत्न, परम पूज्य राष्ट्र संत गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज का विशाल संसंघ का 2 जून 2019 को भव्य मंगल प्रवेश हावड़ा बंगवासी की धरा पर धूमधाम से हुआ। यहाँ आचार्य संघ के प्रवेश होते ही अत्यंत हर्षोल्लास के साथ शांतिनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। जिनागम लेखन महोत्सव का अत्यंत महत्वपूर्ण श्रुतपंचमी पर्व भी गुरुवर के सान्निध्य में मनाया गया जिसमें मंदिर की समस्त जिनवाणी को साज-सज्जा के साथ सिर पर रख महिला-पुरुषों ने विशाल जुलूस निकाला। षटखण्डागम आदि चारों अनुयोग के शास्त्र विराजमान कर सरस्वती पूजन की गई। साथ ही पूज्य गणाचार्य भगवन के सिद्ध हस्तकमल से लिपिबद्ध की गई सर्वोदया टीका की 25वीं (रजत) वर्षगांठ मनाई गई। पूज्य आचार्य कुंदकुंद स्वामी के ग्रंथों पर लिखी गई प्रथम एवं इक्कीसवीं सदी की इन महान (वारसाणुपेक्खा पर सर्वोदया तथा रथणसार पर रत्नत्रयवर्धिनी) टीकाओं को विशेष साज-सज्जा के साथ विराजमान किया गया और बुद्धि रिद्धि वर्धक श्रुत संक्षेप विधान की विशाल रूप में आयोजना की गई।

यहाँ भक्तों की प्रार्थना पर ध्यान देते हुए पूज्य गुरुदेव ने विवेक विहार आदि कॉलोनी में स्थित जिन चैत्यालय के दर्शन भी बड़ी प्रभावना के साथ किये। 16 जून 2019 को प्रसिद्ध हावड़ा ब्रिज को पार कर बंगाल की राजधानी कोलकाता की प्रसिद्ध स्थली बेलगछिया में श्री संघ का विशाल जुलूस के साथ अभूतपूर्व आगमन हुआ। यहाँ पूर्व से विराजमान श्रमणाचार्य श्री सुबलसागरजी महाराज एवं मुनिश्री सुपाश्वरसागरजी महाराज संसंघ ने गुरुवर की भावभीनी अगावानी की। संत मिलन का मनोरम दृश्य देख भक्त हृदय वात्सल्य से भर गए। यहाँ तीनों संघों का पारस्परिक वात्सल्य भाव देखते ही बनता था। पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से मूलाचार, समयसार एवं आत्मानुशासन की वाचना रूप धर्म की वर्षा ने भक्तों के हृदय को

आप्लावित कर दिया।

इस अवसर पर 23 जून को कोलकाता की सकल दिगंबर जैन समाज एवं श्री दिगंबर जैन मुनि सेवा व्यवस्था समिति ने तीनों संघों को बेलगछिया में चातुर्मास करने हेतु अत्यंत उत्साहित हो हृदय की गहराइयों से श्रीफल भेट किया। पूज्य गुरुदेव ने भी उनकी आंतरिक भक्ति, सेवा भाव एवं धर्म के प्रति प्यास देखकर उन्हें चातुर्मास का आश्वासन दिया।

24 जून को संघ यहाँ से विहार कर कोलकाता की हृदय स्थली बड़ा बाजार में पहुँचा। यहाँ की सम्पूर्ण समाज गुरुदेव को पाकर इतनी आनंदित थी मानो किसी गरीब को बहुमूल्य निधि ही प्राप्त हुई हो। यहाँ प्रतिदिन पूज्य गणाचार्य भगवन की पीयूष वाणी भक्तों को हृदयग्राही प्रतीत हुई। हर क्षण बढ़ते हुए ऋम में भक्ति के नए-नए पैगाम गढ़ना यहाँ के भक्तों की अद्भुत कला थी। यहाँ पर अत्यंत सुंदर 44 मांडने मांडकर 44 से भी अधिक जोड़े तथा असीम जनसमूह द्वारा अत्यंत धर्म प्रभावना पूर्ण कल्याण मंदिर विधान किया गया। तत्पश्चात परम पूज्य गणाचार्य गुरुदेव संसंघ ने चौरंगी एवं काकुड़गाछी में धर्म प्रभावना कर कोलकाता की समग्र कॉलोनी को धर्ममय बना दिया। कोलकाता वासियों को विगत 19 वर्षों से पूज्य गुरुदेव संसंघ का बेसब्री से इंतजार था। इस वर्ष अपने आराध्य की अभिवंदना का पुण्य अवसर अपने ही नगर में पाकर भक्त हृदय आनंद सागर में गोता लगा रहे थे।

परम पूज्य राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागरजी महामुनिराज संसंघ की कोलकाता महानगर में विभिन्न स्थानों पर समस्त व्यवस्थाएँ श्री दिगंबर जैन मुनि सेवा व्यवस्था समिति द्वारा सुव्यवस्थित रूप से समर्पण के साथ की जा रही है। 14 जुलाई को प.प. गणाचार्य श्री संघ का वर्षायोग हेतु दिगंबर जैन मंदिर बेलगछिया में भव्य मंगल प्रवेश हुआ और 40वें वर्षायोग का ध्वजारोहण संपन्न हुआ। 16 जुलाई को गुरु पूर्णिमा और 17 जुलाई को वीर शासन जयंती तथा 21 जुलाई को चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना का आयोजन भव्यता के साथ किया गया।

આચાર્ય વર્ધમાનસાગરજી સસંઘ યરનાલ મેં ભાવ્ય પ્રવેશ, ચાતુર્માસ સ્થાપના મેં પહુંચે દેશભર કે શ્રદ્ધાલુ

યરનાલ અબ દીક્ષા સ્થળ તીર્થ : આચાર્ય શ્રી વર્ધમાનસાગરજી



યરનાલ। ચારિત્ર ચ્રક્રવર્તી પ્રથમાચાર્ય શ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ કા દીક્ષા સ્થળ અબ તીર્થ કે રૂપ મેં જાના જાએગા। પરમ્પરા કે પંચમ પદ્મધીશ રાષ્ટ્રગૌરવ આચાર્યશ્રી વર્ધમાનસાગરજી મહારાજ ને કહા કી યરનાલ કેવલ ગ્રામ નહીં હૈ યહ દીક્ષા સ્થળ તીર્થ બન ગયા હૈ। દેશભર સે પહુંચે શ્રદ્ધાલુઓનો સમ્બોધિત કરતે હુએ આચાર્યશ્રી ને કહા કી કર્નાટક ઉત્તર કન્નડ ક્ષેત્ર મેં સંઘ કા યહ પહલા ચાતુર્માસ હૈ। યહ ભૂમિ અત્યન્ત પૂજનીય ઇસલિએ હૈ કે દિગ્મબર જૈન જગત કે બીસવીં સદી કે ઇતિહાસ મેં યહોંસે પ્રથમ આચાર્ય પ્રાસ હુએ થે। આચાર્યશ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ ને યરનાલ મેં દીક્ષા લેકર મુનિર્ધર્મ કા પુનઃ ઉદ્ઘાર કિયા હૈ। જો હમ સબકે લિએ પ્રેરણ હૈ। પં. સુમેરચંદ દિવાકર ને ઉનકા જીવનવૃત્ત 'ચારિત્ર ચ્રક્રવર્તી' મેં લિપિબદ્ધ કર હ્યાપરે સામને ઉનકે આદર્શ જીવન કો સામને રહ્યા હૈ। આચાર્યશ્રી ને દેશભર મેં વિહાર કર વ દિલ્લી કે સંસદ કે સમક્ષ લાલ કિલે કે સામને આદિ સ્થાનોને પર પહુંચકર દિગ્મબર મુનિ કો સખી સ્થાનોને પર જાને કે રાસ્તે ખોલે હૈ।

સંઘસ્થ બ્ર. પૂનમ દીદી, દીસિ દીદી કે સુમધુર મંગલાચરણ સે પ્રારંભ ધર્મસભા મેં ઓઝસ્વી પ્રવચનકાર મુનિશ્રી અપૂર્વસાગરજી મહારાજ ને કહા કી આચાર્યશ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ ચૈતન્ય ચમત્કારી સંત થે, વે આધ્યાત્મિક જાદૂગર, શ્રમણો કે સરતાજ, અનુત્તર યાત્રા કે સફલ યાત્રી, ત્રદ્ધિ-સિદ્ધિ સમ્પત્તિ, જ્ઞાન કે સૂરજ, આગમનિષ્ઠ, ચુમ્બકીય આકર્ષણ કે ધની, ઘોરાતિઘેર ઉપસર્ગ વિજયી, જિનવાળી સંરક્ષક, નરશ્રોષ, ભવિષ્ય દૃષ્ટિ, શાંતમૂર્તિ થે। જિન્હોને સ્વયં સંયમ ધારણ કિયા ઔર અનેક જનોનો કો સંયમ કે માર્ગ પર લગાયા। ગોમ્મટેશ્વર ભગવાન બાહુબલી તીર્થ શ્રવણબેલગોલા કે યશસ્વી જગદુરુ કર્મયોગી સ્વસ્તિશ્રી ચાર્લ્કીર્ટિજી ભદ્રાક સ્વામી ને અપને મધુર વચનોને સમ્બોધિત કરતે હુએ કહા કી આચાર્યશ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ કે પૈર મેં ચક્ર વ હાથ મેં ધ્વજા કા ચિન્હ થા। વૈસા હી આચાર્યશ્રી વર્ધમાનસાગરજી કે હાથ વ પૈર મેં ભી હૈ। ઇસી સમાનતા કે ચલતે સૌ વર્ષ બાદ ઉનકી પરમ્પરા કે આચાર્ય કા ચાતુર્માસ યરનાલ મેં હો રહા હૈ।

પદ્મ વિભૂषણ ધર્માધિકારી ડૉ. ડી. વીરેન્દ્ર હેગડે ધર્મસ્થળ ને કહા કી અપને બચ્ચોનો પ્રતિ શનિવાર-રવિવાર મુનિ મહારાજ કે પાસ લેકર જાએ, ઉનસે ધાર્મિક સંસ્કાર ઉહેં દિલવાયે, જિસસે ઉનમે જાગૃતિ આએણી। 12 વર્ષ બાદ હોને વાલે મહામસ્તકાભિષેક મહોત્સવ હેતુ ઉન્હોને આચાર્ય સંઘ સે અપના સાન્નિધ્ય પ્રદાન કરને કી પ્રાર્થના ભી કી। સમાજ કી વરિષ્ઠ મહિલા નેત્રી શ્રીમતી સરિતા એમ.કે.જૈન ચૈન્સી ને સ્વાગત ભાષણ દેતે હુએ કહા કી હમ સબ સૌભાગ્યશાલી હૈ, જિન્હોને આચાર્યશ્રી વર્ધમાનસાગરજી મહારાજ કે સાન્નિધ્ય મેં

તીન બાર મહામસ્તકાભિષેક કિયા। આજ ઉનકે કારણ આચાર્યશ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ કે દીક્ષા સ્થળી તીર્થ કે રૂપ મેં વિકસિત હો રહી હૈ।

ઇસ અવસર પર શ્રાવક શ્રેષ્ઠી સર્વશ્રી અશોક પાટની (આર.કે.માર્બલ) કિશનગઢ, રાજેન્દ્ર કટારિયા, સંજય પાપડીવાલ, સુરેશ રાવ સા. પાટિલ સબલાવત, વિનોદ ડોડનવાર, રાકેશ સેઠી, શ્રીપાલ ગંગવાલ આદિ ને દીપ પ્રજ્જવલન કિયા। શ્રીમતી તારાદેવી સેઠી, પારસ સુશીલાદેવી પાણ્ડ્યા, રમેશ વિમલાદેવી ગિરોડી પારસ, ચેલના દેવી આદિ કા સમ્માન ભી કિયા। કન્નડ વ ગુજરાતી ભાષા મેં અનુવાદિત 'ચારિત્ર ચ્રક્રવર્તી' ગ્રંથ કા વિમોચન અતિથિઓને કિયા। દેવી પદ્માવતી તીર્થ હુમચા કે ભદ્રાક શ્રી દેવેન્દ્રકીર્તિ સ્વામી ને કહા કી આચાર્ય વર્ધમાનસાગરજી સરલતા વ વાતસલ્ય કી પ્રતિમૂર્તિ હૈ, ઉનકે સાન્નિધ્ય મેં તીન મહામસ્તકાભિષેક એક રિકાર્ડ હૈ વે સબકો સાથ લેકર વ હુસમુક વ્યવહાર સે સબકો અપના બના લેતે હૈ। વે જન-જન કે પ્રારે આચાર્ય હૈ। ઉનકા ચાતુર્માસ યશસ્વી વ જયવંત હોણા।

આ. શાંતિસાગરજી મુનિદીક્ષા શતાબ્દી વર્ષ

ઉલ્લેખનીય હૈ કી યહ વર્ષ પ્રથમચાર્ય શ્રી શાંતિસાગરજી મહારાજ કા મુનિદીક્ષા શતાબ્દી વર્ષ હૈ, ઉન્હોને મુનિદીક્ષા યરનાલ મેં લી થી। ઇસી કારણ ઉન્હીને કી પરમ્પરા કે પંચમ પદ્મધીશ આચાર્યશ્રી વર્ધમાનસાગરજી મહારાજ સસંઘ 45 પિછ્છીધારી ત્યાગિયોને કે સાથ યરનાલ મેં ચાતુર્માસ કર રહે હૈ। યરનાલ મેં આચાર્ય સંઘ કી વ્યવસ્થાએ કી ગઈ હૈ। બઢી સંખ્યા મેં પહુંચે રહે શ્રદ્ધાલુ ગુરુભક્તોનો આવાસ-ભોજનાદિ કી સમુચ્ચિત વ્યવસ્થાએ હૈ। સમાજજન બડી સંખ્યા મેં યરનાલ પહુંચકર આચાર્ય સંઘ કી આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર રહે હૈ। વહીને ઉનકી દીક્ષા સ્થળી પર નિર્મિત કીર્તિ સ્તમ્ભ કી નિહારકર અપને દિગ્મબરાચાર્ય કી સ્મરણ કર ઉનકે પ્રતિ વિનયાન્જલી સર્માર્પિત કર રહે હૈ। યરનાલ દિગ્મબર જૈન સમાજ મહિલા મણ્ડલ, યુવા મણ્ડલ સભી આચાર્ય સંઘ કી સેવા મેં લગા હૈ વહીને રાષ્ટ્રીય કમેટી કે પદાધિકારી ભી સર્માર્પિત ભાવ સે ચાતુર્માસ કે સફલ બનાને મેં સંલગ્ન હૈ। ચિત્ર અનાવરણ, દીપ પ્રજ્જવલન, શાસ્ત્ર ભેંટ, ચાતુર્માશ કલશ સ્થાપના વ આરતી શ્રી સરોજ કુમાર બગડા સેલમ, રાજેન્દ્ર કુમાર છાબડા ગૌહાટી વ બગડા પરિવાર સેલમ વ છાબડા પરિવાર ગૌહાટી ને કિયા। કલશ સ્થાપના કી સમસ્ત માંગલિક ક્રિયાએ પં. શ્રી મહાવીરજી જૈન જોબનેર વ સંઘસ્થ પં. શ્રી પ્રમોદ શાસ્ત્રી ને સંપત્ત કરાઈ। આચાર્યશ્રી કા પાદ પ્રક્ષાલન શ્રીમતી સુનીતા દેવી ભાગચંદ જૈન ચૂંદીવાલ ગૌહાટી ને કિયા।

'साँसे हो रही कम, आओ पेड़ लगाएँ हम' संदेश के साथ नवागढ़ में पौधारोपण संपन्न



ललितपुर। पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण की वजह से वृक्षारोपण की आवश्यकता इन दिनों अधिक हो गई है। इस उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए तथा शासन द्वारा चलाये जा रहे वृक्षारोपण महाकुंभ में अपनी सहभागिता निभाते हुए महरौनी विकासखंड में स्थित प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में परम पूज्य मुनि श्री सरल सागर जी महाराज के सान्त्रिध्य में अरनाथ विधान एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया।

इस दौरान आम, आंवला, करोंदा, अमरूल, अशोक आदि के वृक्षों को रोपित कर पर्यावरण संबद्धन का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर क्षेत्र निर्देशक ब्र. जय कुमार जी निशांत ने कहा कि पृथ्वी का आभूषण वृक्ष हैं। वृक्ष हमें आकसीजन देकर हमारे बातावरण को स्वच्छ रखते हैं। वर्तमान समय में बिगड़ते हुए पर्यावरण को देखते हुए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक वृक्ष जरूर लगाना चाहिए। क्षेत्र के प्रचारमंत्री डॉ. सुनील संचय ने बताया कि बन पृथ्वी की अमूल्य धरोहर है। वह मूल से लेकर शिखा तक हमारे लिए है। उनकी रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। अपने और आने वाली पीढ़ी के जीवन को बचाने के लिए हमें वृक्षारोपण करना ही होगा।



कोषाध्यक्ष राजकुमार चूना ने कहा यदि हम चाहते हैं कि प्रदूषण कम हो एवं हम पर्यावरण की सुरक्षा के साथ सामंजस्य रखते हुए संतुलित विकास की ओर अग्रसर हों, तो इसके लिए हमें अनिवार्य रूप से वृक्षारोपण का सहारा लेना होगा।

मुनि श्री सरलसागर जी ने इस पुनीत कार्य को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि पर्यावरण को बचाना है तो हमें वृक्षारोपण करना होगा। वसुधा का अनुपम उपहार वृक्ष ही है। अच्छा जीवनयापन करना चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाने चाहिए। जैनर्दर्शन में पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति, अग्नि में जीवत्व माना गया है। सदैव इनके संरक्षण और सम्बद्धन की बात आचार्यों ने कही है।

इस पावन कार्य में क्षेत्र कमेटी के निर्देशक ब्र. जय निशांत जी, कोषाध्यक्ष श्री राजकुमार चूना, चंद्रभान जैन डुंडा, इंजी. शिखर चंद्र जैन, भागचंद चूना, सुरेंद्र सोजना, डॉ. सुनील संचय, सुनील शास्त्री टीकमगढ़, अमित जैन कंप्यूटर, राकेश ककरवाहा, सुरेश जैन ककरवाहा, त्रिशला महिला मंडल ककरवाहा एवं ग्रामीणजनों ने अपनी उपस्थिति प्रदान कर वृक्षारोपण किया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

श्री सुधीर कुमार सांधेलिया का देहावसान

दमोह। स्व. श्री सुधीर कुमार सांधेलिया का जन्म 8 जून 1965 को इटारसी में रीठी निवासी प्रो. भागचंद्र जैन 'भागेन्द्र' और माता श्रीमती सरोज सांधेलिया के घर हुआ। श्री सांधेलिया प्राच्य विद्याओं और जैन दर्शन के अग्रण्य विद्वान थे। मध्यप्रदेश शासन की संस्कृति अकादमी के पूर्व सचिव तथा राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन तथा रिसर्च इंस्टीट्यूट श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) के पूर्व डायरेक्टर प्रो. डॉ. भागचंद्र जैन 'भागेन्द्र' के छोटे सुपुत्र थे। एम.ए. (राजनीति शास्त्र) शिक्षित स्व. सुधीरजी ने इटारसी, सीहोर और दमोह के शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त की। वे दमोह में सांधेलिया मेडिकल स्टोर्स के संचालक तो थे ही, संगीत के क्षेत्र में भी उनकी गहरी पैठ थी। वे ऑर्केस्ट्रा स्टॉट मेमोरी के प्रोप्राइटर थे। उन्हें बाल्यकाल से ही मिलिट्री जैसी ड्रेस से विशेष लगाव था। उनमें रिश्तेदारों को सहेजना की आत्मीयता थ और रुद्धिवादी विचारधारा के सदैव खिलाफ थे। आपका अंतिम संदेश था- 'अंतिम टिकिट कन्फर्म है, जी भरकर जी लो।' आपका



देहावसान 15 मई 2019 को दमोह में हुआ।

स्व. सुधीर कुमार सांधेलिया की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा सांधेलिया महिला जैन मिलन सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय कार्यकर्ता और पदाधिकारी हैं। पुत्र प्रियांशु कुमार सांधेलिया (बी.फार्म, एमबीए) है। बड़े भाई सुनील कुमार सांधेलिया (बीएससी एलएलबी) और भाई श्रीमती साधना सांधेलिया (एमए) सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आपकी बहिन श्रीमती सुनीता जैन (बीएससी एमए) और बहनोई श्री अजीत जैन म.प्र. शासन सिंचाइ विभाग के सेवानिवृत्त चीफ इंजीनियर हैं। श्री सुधीर कुमार सांधेलिया का देहावसान समाज और संगीत जगत की अपूरणीय क्षति है। उनके निधन पर देश की अनेक संस्थाओं, मनीषियों ने शोक संदेश और भावनाएँ प्रेषित की हैं। देशभर में शोक सभाओं के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-सुमित जैन 'आर्जव', दमोह



साधुओं में बढ़ता शिथिलाचार और हमारा कर्तव्य

» प्रो. वीरसागर जैन

आजकल दिग्म्बर जैन साधुओं में भी बहुत अधिक शिथिलाचार आ गया है और वह भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा है। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाए। सारी समाज अत्यधिक चिंतित है, दुःखी है। धर्म का ऐसा पतन उससे देखा नहीं जा रहा है। वह समाधान या मार्गदर्शन चाहती है कि ऐसी स्थिति में आखिर किया क्या जाए। लोग 'धर्म संरक्षण संघ' आदि अनेक संस्थाएँ बना कर पवित्र भाव से संगोष्ठियाँ आदि आयोजित कर रहे हैं और सच में समस्या का निदान जानना चाहते हैं, अतः यहाँ मैं अपने कुछ सुझाव संक्षेप में प्रकट करता हूँ। आशा है समाज के सभी लोग इन पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करेंगे। यथा-

बहुत अधिक दुःखी और चिन्ताग्रस्त न हों। दुःख, चिंता, विषाद आदि हर हालत में त्याज्य होते हैं, क्योंकि इनसे घोर असाता वेदनीय आदि कर्मों का आस्त्रव-बन्ध होता है। दुःखी होने से समस्या का समाधान भी नहीं होता और अपनी ऊर्जा बहुत बर्बाद होती है। अतः अपनी तरफ से हम प्रयास तो खूब करते रहें, परन्तु बहुत अधिक दुःखी और चिन्ताग्रस्त न हों। इसे कलिकाल का प्रभाव जानकर अपने अन्तरंग में शान्ति भी धारण किये रहें। यह दुर्लभ मनुष्य भव हमें अपने आत्मकल्याण के लिए मिला है। हम किसे सुधारेंगे? कौन किसे सुधार सकता है? ('आदहिदं कादव्यं ..') / ('अरे सुधारक जगत के चिंता मत कर यार, तेरा मन ही जगत है पहले इसे सुधार')

शिथिलाचार को मिटाने के लिए जो उचित प्रयास हमें करने चाहिए, उनमें से एक तो सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हमें स्वयं भी आगम के आलोक में मुनिदशा का स्वरूप भली-भाँति समझना चाहिए और दूसरों को भी भली-भाँति समझाना चाहिए। यह अत्यंत आवश्यक कार्य है। इसके बिना शिथिलाचार को समाप्त करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जितना भी शिथिलाचार समाप्त होगा, इसी से होगा। अतः हमें स्थान-स्थान पर मुनियों के स्वरूप पर गोष्ठियाँ करनी चाहिए। तथा इन गोष्ठियों में किसी व्यक्ति विशेष पर टिप्पणी किये बिना शास्त्रीय पद्धति से निष्पक्ष चर्चा करनी चाहिए। इनसे जन-जागरण का महान कार्य होगा और शिथिलाचार पर सहज ही अंकुश लग जाएगा। साधु के शिथिलाचार में आज श्रावक भी उन्हें अनुचित वस्तुएँ प्रदान करके महा दोष के भागी बने हुए हैं, अतः जब उन्हें भी सम्यक् ज्ञान होगा तो सहज ही उसका परिणाम बहुत अच्छा आएगा।

हम सबको भलीभाँति समझना चाहिए कि दिग्म्बर साधु बनना आसान नहीं है, खासकर आज की विषम परिस्थितियों में; अतः इस विषय में जल्दबाजी करना उचित नहीं है। मन तो करेगा, लोग भी बहुत उकसाएँगे, परन्तु हमें अपनी योग्यता का गहराई से विचार करके ही निर्णय करना होगा, अन्यथा बहुत पश्चाताप हो सकता है। यदि हमारा कोई साधर्मी भाई भी इस विषय में

जल्दबाजी कर रहा हो तो उसे भी सावधान करना चाहिए। यद्यपि यहाँ ऐसी बात कहते हुए मुझे बहुत संकोच हो रहा है, किन्तु वर्तमान परिस्थितियाँ अच्छी नहीं हैं और आगे अनेकाले दिनों में तो और भी खराब हो जाएँगी-ऐसा लगता है। वर्तमान में बढ़ते हुए शिथिलाचार को देखते हुए अब एक नियम यह बना देना चाहिए कि किसी को भी सीधी मुनिदीक्षा नहीं दी जाएगी, उसे पहली-दूसरी-तीसरी आदि प्रतिमाओं के क्रम से अभ्यास करते हुए ही आगे बढ़ना होगा। हाँ, एक सल्लेखना-काल इसका अपवाद हो सकता है।

जो लोग दिग्म्बर मुनिदीक्षा ले चुके हैं, उन्हें बहुत ही सावधानीपूर्वक इस परम धर्म का निर्वाह करना चाहिए। हो सके तो उन्हें किन्हीं उत्तम तीर्थस्थानों पर जाकर ज्ञान-ध्यानपूर्वक आत्मसाधना करनी चाहिए, महानगरों में कंचन-कामिनी के बीच नहीं रहना चाहिए। तथा एक बात और अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यदि इस महान मुनिक्रत का निर्वाह स्वयं से कथमपि नहीं हो रहा हो तो इसे निःसंकोच छोड़ देना चाहिए। इसी में हित है। जबरदस्ती अपने परिणाम खराब करते रहना और इस ऊँचे मुनि पद में ही नीचा कार्य करना उचित नहीं है। बाद में जब परिणाम अच्छे हो जाएँ तो पुनः दीक्षा ली जा सकती है। साधुओं को छोटे-छोटे शिथिलाचार न छूटें तब भी बड़े-बड़े शिथिलाचार तो अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। जैसे- एकान्त में स्त्री से वार्ता करना, उसे छूना, धनादि परिग्रह को रखना, उसका स्वयं लेन-देन करना, आदि। ये भयंकर अपराध हैं जो जन्म-जन्मान्तर खराब कर देंगे। साधुओं को सभी आगन्तुकों से भी सदा ज्ञान-ध्यान की ही बात करनी चाहिए, साँसारिक बातें नहीं करनी चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि हमें शिथिलाचारी साधुओं को आहार, आवास आदि भी नहीं देना चाहिए, उनके पास ही नहीं जाना चाहिए और उनकी स्पष्ट शब्दों में खुले आम निंदा-आलोचना करनी चाहिए। यह बात एक अपेक्षा से ठीक हो सकती है, परन्तु मुझे सर्वथा उचित नहीं लगती। वे लोग हमारे साधर्मी भाई हैं। उनके प्रति वात्सल्य भाव रखकर स्थितिकरण का भाव रखना हमारा कर्तव्य है। समस्या सुलझेगी तो इसी से सुलझेगी, अन्यथा दूरी बढ़ाने से तो समस्या के सुलझने की सम्भावना ही समाप्त हो जाएगी। हाँ, जो मुनि बहुत ही कल्पित परिणाम के हैं, उनसे दूर रहना चाहिए। परन्तु मेरा अनुभव है कि आज भी अधिकाँश मुनि अच्छे मन के हैं, मुमुक्षु हैं, जिज्ञासु भी हैं और स्वयं में परिष्कार के सच्चे अभिलाषी भी हैं, परन्तु उन्हें न तो कुछ स्वयं समझ में आ रहा है और न ही कोई अन्य व्यक्ति उन्हें अच्छी तरह समझाने वाला है, इसलिए वे जैसा समझ में आ रहा है, वैसा कर रहे हैं। उन्होंने घर-परिवार आदि छोड़ा तो आत्मकल्याण की विशुद्ध भावना से ही था, परन्तु ठेस तत्त्वज्ञान न होने से बात बनी नहीं। अतः हमें उनके पास अवश्य उठना-बैठना चाहिए और उनकी साधना में सहयोग देना चाहिए, उनसे गहरी तत्त्वचर्चा करनी चाहिए। उनके साथ बहुत अधिक स्वाध्याय करना चाहिए। परन्तु ध्यान रहे कि हमें उनके शिथिलाचार का किंचित् भी पोषण नहीं करना है, अपितु शालीनता से उनको उससे बचाने का विशुद्ध प्रयास करना है। यह भी समझना है कि आज भी इन साधुओं का जैन संस्कृति की रक्षा-सुरक्षा में बहुत बड़ा योगदान है।

इसी प्रकार की और भी अनेक बातें कही जा सकती हैं, परन्तु समझदार को संकेत ही पर्याप्त है - ऐसा जानकर साधु और श्रावक सभी के हित की मंगल कामना करता हुआ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जैनं जयतु शासनम्।



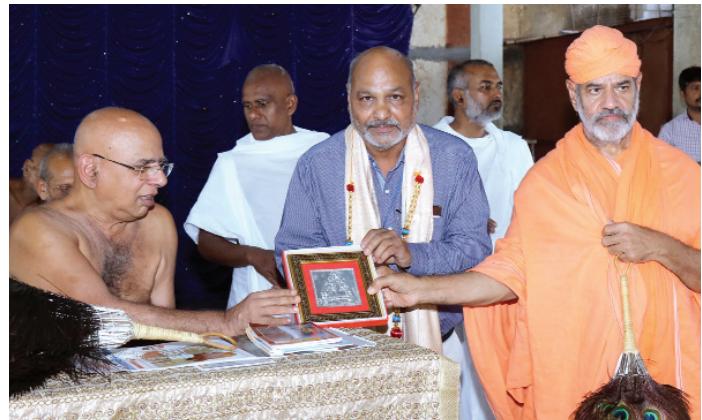
श्रवणबेलगोल में स्थापित संतों की एकता को शाश्वत रूप प्रदान करें



» **सुरेश जैन (आई.ए.एस.)**
भौपाल (म.प्र.), मो. 9425010111
अध्यक्ष : नैनागिरि सिद्धाळेश्वर

जत महामस्तकाभिषेक के अवसर पर महाभट्टारक पूज्य चारूकीर्ति जी ने विविधता में एकता के अनेक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। आध्यात्मिक गुणवत्ता के सर्वोच्च शिखर विनिर्मित किए हैं। विविध क्षेत्रों की उभरती हुई प्रतिभाओं को सम्मानित कर युवा नेतृत्व की परिभाषा को नये आयाम दिए हैं। सामान्य नागरिकों के सामान्य कार्यों को सम्मानित किया है। उदीयमान प्रतिभाओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच दिया है। पूरे देश में फैल रही आध्यात्मिक और सामाजिक अराजकता को नियंत्रित करने का आदर्श उपस्थित किया है। आध्यात्मिक जगत में विश्व स्तरीय सार्थक भूमिका का निर्वाह किया है। सम्पूर्ण समर्पण के साथ अपने सुदीर्घ अनुभव और गहरी समझ का नवनीत पूरे दुनिया को भेंट किया है। जैन धर्म की सर्वोच्च धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं का पूरी निष्ठा से सम्मान किया है। सहिष्णुता और प्रभावी समन्वय के उल्कृष्टतम मानदण्ड सुस्थापित किए हैं। समयानुकूल आवश्यक आंशिक परिवर्तन कर भट्टारक परंपरा को जीवंत ही नहीं अपितु सुदृढ़ किया है। अपनी धार्मिक और सामाजिक भूमिका से जन-जन को प्रभावित किया है। अंसुष्टु विद्वानों और उनके विचारों को अहमियत देने की परंपरा को पुनर्जीवित कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्रवणबेलगोल महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आचार्य वर्द्धमानसागर जी के सक्षम एवं सफल आध्यात्मिक नेतृत्व में तीन सौ से अधिक मुनिवरों का मधुर मिलन जैन संस्कृति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य उदाहरण स्थापित हो गया है। आध्यात्मिक जगत के संतो ने अपने बीच पारस्परिक संवाद और शिष्टाचार के अनुकरणीय सर्वोच्च मापदण्ड स्थापित किये हैं। संतो के बीच स्थापित संवाद और उसके अच्छे तत्व ग्रहण करने के नवोदित इस सिलसिले से पूरी समाज में गलतफहमी और तनाव कम हुआ है। पूज्य वर्द्धमानसागर जी के उदार विचारों को सभी साधुओं ने शालीनता और स्वेच्छा से स्वीकार कर जैन आध्यात्मिक एकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। अनेकांतात्मक बहुलता, विविधता और वैचारिक भिन्नता के बीच संस्थापित जैनत्व की एकता की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। इसके सूत्रधार चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी को सर्वत्र साधुवाद और सम्मान प्राप्त हो रहा है। भले ही संतो की यह एकता देखकर कुछ संतो के कट्टर शिष्य असहजता अनुभव करें किन्तु अब यह आवश्यक, अनिवार्य एवं उपयुक्त



प्रतीत होता है कि देश के अन्य सभी संत यही उदाहरण अपने-अपने संघ में प्रस्तुत करें। अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करें और पूरे देश के संतो का जैन ध्वज के नीचे एकीकरण करें।

बीसवीं शताब्दी के अंत तक तेरापंथ और बीसपंथ के बीच इस प्रकार की भीषण कटुता नहीं थी जो इक्कीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक दशकों में फैलती जा रही है। हमारे कुछ संत और विद्वान तेरापंथी या बीसपंथी विचारधारा को जैन संस्कृति की केन्द्रीय विचारधारा बनाते जा रहे हैं। कुछ आचार्यों और मुनिवरों के कट्टर शिष्य संतों के बीच पारस्परिक विवाद पैदा कर अपनी जीत का दावा करते हैं किन्तु इससे महावीर हर बार हार जाते हैं। जैन संस्कृति का लोक व्यापक प्रभाव घटने लगता है। यह दुखद है कि विभिन्न पंथों और जैन संतो के बीच फैल रही आध्यात्मिक असहिष्णुता और कट्टरता जैनत्व की पहचान को खत्म करती जा रही है। तेरापंथ अथवा बीसपंथ मुक्त जैन संस्कृति की कल्पना करना ही संभव नहीं है। ऐसी कल्पना पूरी जैन संस्कृति को घातक होगी। सभी पंथों के संत और ग्रन्थ जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं और किसी पारस्परिक द्वंद के बिना शांति पूर्वक साथ-साथ चलते रहे हैं। वर्तमान समय में धनीभूत होता हुआ यह द्वंद संकीर्ण विचारधारा और आध्यात्मिक कटुता को जन्म दे रहा है। जन-जन की कामना है कि आध्यात्मिक विरादी एक दूसरे पंथ की खूबियों और खामियों को स्वीकार करते हुए मोक्ष पथ पर आगे बढ़ती रहे और जन-जन का कल्याण करती रहें।

आध्यात्मिक जगत में अनावश्यक आलोचनाओं से ओतप्रोत प्रवचन करने और भड़काऊ भाषा का उपयोग करने को उच्च कोटि की वकृत्व शक्ति समझी जाने लगी है। तेरापंथ और बीसपंथ की कटुता से विषाक्त जैन समुदाय के अनेक व्यक्ति एक दूसरे की अच्छी बातों का भी मौसमी विरोध करने के लिए अभिशप होते जा रहे हैं। हमारे कुछ संत अपने महोत्सव के मंच से नीचे उतरते ही अपनी विनम्रता छोड़ कर अपने मूल स्वभाव में आ जाते हैं। ऐसी विषम आध्यात्मिक परिस्थितियों में पूज्य चारूकीर्ति जी के शब्द और वाक्य विवेकपूर्ण और संयमित होते हैं। उन्होंने पूरी विनम्रता और असीम शांति अपने व्यवहार में ही नहीं अपितु अपने पूरे व्यक्तित्व और स्वभाव में आत्मसात कर ली है। उन्होंने विनम्रता को अपना व्यवहार ही नहीं अपितु स्वभाव बना लिया है। अपना गहना बना लिया है। अतः उन्हें यह सोचना नहीं पड़ता है कि किसके साथ कब और कैसा व्यवहार करें? उनके स्वभाव की यह विनम्रता और शांति ही चारों महामस्तकाभिषेकों की सर्वोच्च सफलता की आधारभूमि तथा जननी रही है।



गोलापूर्व महासभा का 100 वर्ष पूर्व मुद्रित एक पोस्टकार्ड

» सुधीर जैन
सुषमा प्रेस, सतना

गोलापूर्व महासभा का 100 वर्ष पुराना एक मुद्रित पोस्टकार्ड मेरे संग्रह में शामिल है। गोलापूर्व महासभा का गठन सन् 1918 में हुआ था। प्रतिवर्ष इसका वार्षिक अधिवेशन होता था। सन् 1920 में इसका द्वितीय वार्षिक अधिवेशन तीर्थक्षेत्र रेशन्दीगिर में होना निश्चित हुआ था। इसी की सूचना देने तथा सभापति का नाम चुनने के लिए यह पोस्टकार्ड सभी सदस्यों को भेजा गया था और अनुरोध किया गया था कि इस पोस्टकार्ड पर ही अपने रुचि के एक सदस्य का नाम सभापति हेतु लिखकर अपने हस्ताक्षर करके गोलापूर्व सभा के मंत्री को वापस भेज दें।

भारतीय डाक विभाग के एक पैसे के इस मुद्रित पोस्टकार्ड के सामने की ओर इस प्रकार पता लिखा था -

मंत्री गोलापूर्व सभा
ठि. नमक मन्डी कटरा बाजार
सागर, सी.पी.

पोस्टकार्ड के पीछे की ओर निम्नलिखित मैटर छपा हुआ था -
नं.. 113011 मि.

श्रीयुक्त माननीय सभासद -----जी

योग्य सादर जहारु. अपरंच अपनी (गोलापूर्व) सभा का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन मिती अगहन सुदी 11 से 14 तक रेशन्दीगिर पर होना निश्चित हुआ है। अतएव आप अपने आने की अवश्यमेव मंजूरी देवेंगे; और गोलापूर्व जैन अंक 4 से जो 6 नाम सभापति (अधिवेशन) के चुनने बाबत लिखे गए थे उनमें से एक मनोनीत महाशय का नाम शीघ्र ही कार्तिक सुदी 15 तक भेजेंगे क्योंकि समय थोड़ा रहा है और कार्य-व्याख्यानादि के छपने का अधिक है अतः इस पर विशेष लक्ष्य देवेंगे और इसको भर कर तुरंत भेजेंगे।

नोट : यदि कोई प्रस्ताव वगैरह उपस्थित करने के योग्य होवे तथा सवारी वगैरह के इंतजाम करने बाबत कुछ निर्णय करना हो तो निम्न लिखित पते पर पत्रादि भेजिये :-

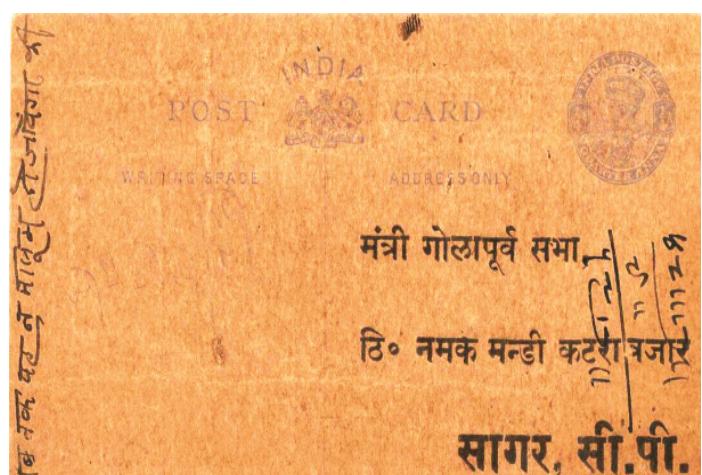
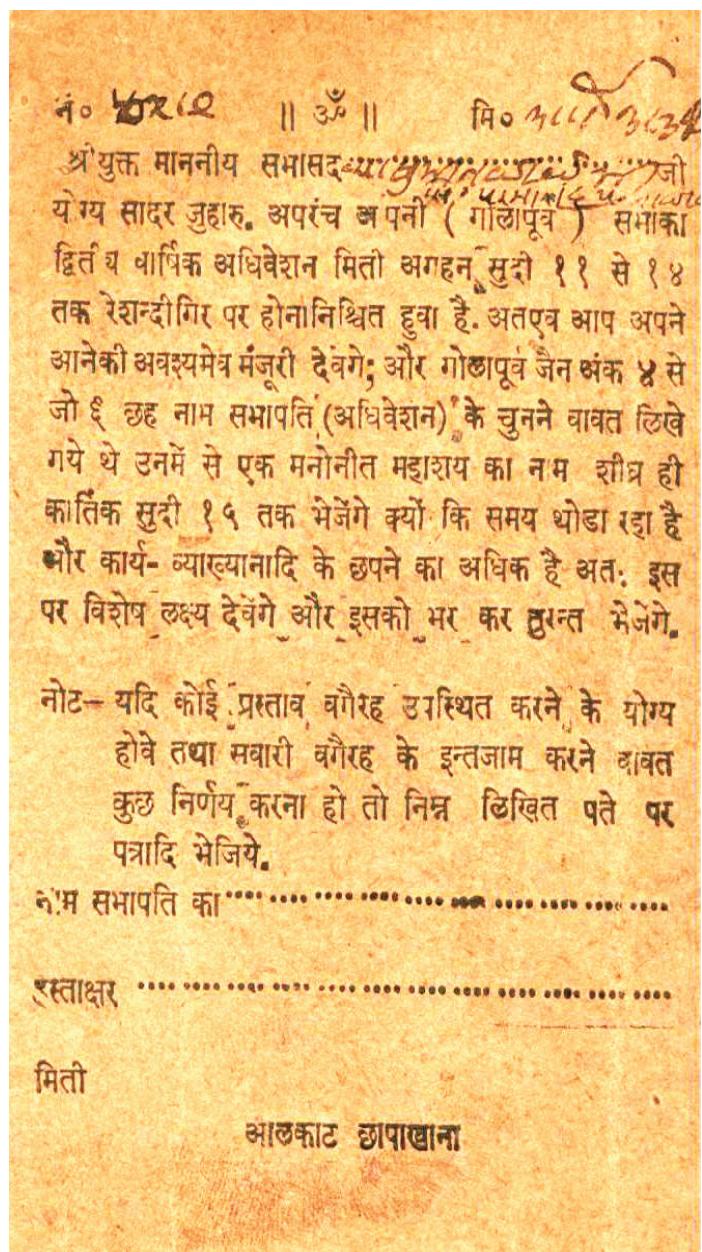
नाम सभापति का

हस्ताक्षर

मिती

आलकाट छापाखाना

गोलापूर्व सभा के सभी सदस्यों को इस प्रकार का मुद्रित पोस्टकार्ड भेजकर उनसे सभापति के लिए एक नाम चयन करके सूचित करने का अनुरोध किया गया था। यह द्वितीय वार्षिक अधिवेशन रेशन्दीगिर तीर्थ क्षेत्र पर सन् 1920 में आयोजित किया गया था। सभापति के लिये 6 नाम आये थे। संस्था द्वारा सन् 1920 में सागर से एक मासिक पत्रिका 'गोलापूर्व जैन' का प्रकाशन शुरू किया गया था। इसके चौथे अंक में ये 6 नाम छाप दिये गये थे। सदस्यों को इनमें से एक का चयन करना था।



आचार्यश्री विद्यासागरजी का चातुर्मास नेमावर में

नेमावर। आचार्य विद्यासागर महाराज का 52वां चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह रविवार को सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर में हुआ। इसमें देशभर से आए धनपतियों ने गुरु के आगे लक्ष्मी न्योछावर की। इस मौके पर नौ मुख्य कलशों के अलावा 11 और 21 लाख के 52-52 कलश भी बोलियों के लिए रखे गए थे। जिन कलशों की बोलियां ली गईं, उनमें 18 कलश ऑनलाइन जबकि नौ कलशों की बोली इंदौर के लोगों ने ली।



सिलसिला शुरू हुआ जो करीब दो घंटे चला। सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर ट्रस्ट के अध्यक्ष सुंदरलाल जैन और मंत्री कमल अग्रवाल ने बताया कि 52वें कलश स्थापना के अवसर पर देशभर के कई श्रेष्ठीजन आए। क्षेत्र के विकास और विस्तार के लिए चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया। ससंघ ने आशीर्वाद दिया।

कलश स्थापना समारोह में एकत्रित हुई राशि सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र के विकास कार्य पर खर्च होगी। यहां पंचबालयति मन्दिर, सहस्रकृत जिनालय और त्रिकाल चौबीसी का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही इंदौर में रेवती रेंज के पास साढ़े 27 एकड़ में प्रतिभा स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ बनाया जा रहा है। यहां हॉस्टल, गोशाला का निर्माण किया जा रहा है। इस पर एकत्रित राशि का एक हिस्सा खर्च होगा।

52 साल के साथ जीवन में आचार्य की कलश स्थापना पहली बार त्रयोदशी पर हुई। उनका चातुर्मास कलश हमेशा चौदस को स्थापित होता रहा है। इस पर आचार्य विद्यासागर महाराज ने कहा कि आज त्रयोदशी का दिन है। मैं अभी तक अपना चातुर्मास कलश चौदस के दिन स्थापित करता हूं यह मेरा पहला अवसर है। आप लोगों की रविवार की सुविधा की दृष्टि से यहां के आयोजकों ने मुझसे निवेदन किया और मैंने हां कर दी। उन्होंने कहा कि मोक्षमार्ग व्यक्ति की आंखों में कभी आंसू नहीं होते, लेकिन करुणा-दया अवश्य होती है। आचार्य ने दक्षिण भारत के बुबवाड़ में वर्षायोग कर रहे मुनि नियम सागर और सुधासागर महाराज को निर्यापक का पद दिया। अब ये मुनि जैन आगम की शिक्षा दे सकेंगे। इससे पहले यह पद समय सागर महाराज एवं योग सागर महाराज को दिया गया था।

छंदोदय जैन संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ : राज्यपाल श्री टण्डन



भोपाल। नैनागिरि सिद्धक्षेत्र के यशस्वी अध्यक्ष व आई.ए.एस. श्री सुरेश जैन व न्यायमूर्ति विमला जैन भोपाल ने मध्यप्रदेश के नवनियुक्त राज्यपाल श्री लालजी टण्डन को बाबा दौलतराम वर्णी कृत छंदोदय की प्रति भेंट की। छंदोदय के प्रबंध संपादक श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. ने राज्यपाल महोदय को बताया कि छंदोदय ग्रंथ बाबा दौलतराम वर्णीजी ने छतरपुर जिले के ग्राम नैनागिरि में दसवीं शताब्दी में निर्मित 23 वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ मंदिर में बैठकर लिखा था, 1000 वर्ष पूर्व प्राकृत भाषा में लिखे गोम्मटसार ग्रंथ की हिन्दी पद्यानुवाद कृति छंदोदय वर्णीजी द्वारा 1902 में लिखी गई जिसका प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली ने किया है। राज्यपाल श्री टण्डन ने कृति का अवलोकन करते हुए कहा कि यह छंदोदय जैन संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ सिद्ध होगा। इस कार्य हेतु राज्यपालजी ने श्री सुरेशजी, विमलाजी को साधुवाद देते हुए बधाई व शुभकामनाएँ दी।

डॉ. वीनू जैन लंदन ने भेंट की स्वलिखित कृतियाँ

विश्व के ख्यात विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी लंदन में पदस्थ डॉ. वीनू जैन ने स्वयं द्वारा लिखित बिजनेस स्टडीज कोर्स बुक बिजनेस स्टडीज वर्क बुक एण्डप्राइज कोर्स बुक राज्यपाल श्री टण्डन को भेंट की। श्री सुरेशजी की ज्येष्ठ पुत्रवधू डॉ. वीनू जैन को राज्यपाल महोदय ने विशेष आशीर्वाद व भारतवर्ष का नाम ऊँचा करने के लिए बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी। डॉ. वीनू-विकास सिंधू विगत दस वर्षों से कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय लंदन में प्रोफेसर है, यह जैन जगत के लिए गौरव का विषय है।

नैनागिरि पथारने का दिया निमंत्रण

श्री सुरेश जैन ने राज्यपाल श्री टण्डन को नैनागिरि की प्राकृतिक सुरम्यता से अवगत कराते हुए नैनागिरि पथारने हेतु निमंत्रण भी दिया। श्री टण्डन ने नैनागिरि का वर्णन सुनकर कहा कि भारत भूमि तीर्थ है, यहां प्रकृति ने हमें जो दिया है उसे अवलोकन करने हेतु वे नैनागिरि पथारेंगे।

शिरोमणि संरक्षक



श्री संतोष कुमार जैन
(बैटरी वाल, सागर)



श्री संतोष जैन
(घड़ी सानुब, सागर)



धर्मराज श्री बाबूलालजी
(मेनवार वाले, टीकमगढ़)



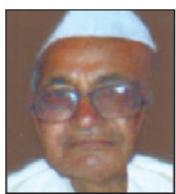
श्री राजेन्द्र चंद्रेरिया
(कोतमा)



श्री महेन्द्र चौधरी
(जबलपुर)



डॉ. श्रेयांसजी बड़कुल
(जबलपुर)



श्री बाबूलालजी
(पनवारी वाले, घुलारा)



श्री सुरेण्ड्र जैन (IAS)
(भोपाल)



श्री अर्षभजी चंद्रेरिया
(कोतमा)



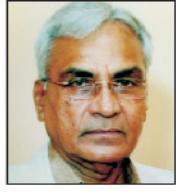
श्री कंचनलाल जैन
(हाहानगुरु)



श्री महेन्द्र कुमार जैन
(एस.ई., हुक्केर)



श्री अरुण कुमार जैन
(टायर वाले, सागर)



श्री नवलचंदजी गोदे
(मुंबई)



डॉ. संजीव सिंहवी (MD)
(रोजाना अस्पताल, झमोड़)

परम संरक्षक



श्री विनोद कुमार जैन
(कोतमा)



श्री इंद्रचंदजी
(सागर)



श्री सनत कुमार जैन
(सागर)



श्रीमती मैनारानी जैन
(सागर)



श्री राजकुमारजी जैन
(सतना)



श्री पवन कुमार चंद्रेरिया
(कोतमा)



श्री अजय कुमार जैन
(जबलपुर)



श्री महेश कुमार मलौया
(आयकर अधिकारी, जबलपुर)



श्री विनोद जैन (दिल्लीप)



श्री लालचंद-श्रीमती कल्पना शास्त्री
(सागर)



श्री वीरेन्द्र कुमार-मनोज कुमार जैन
(खुर्द)



श्री विलास सराफ-श्रीमती सुधा सराफ
(सागर)



श्री सुधोकर चंद्रेरिया
(सागर)



इंजी. रघुवर प्रसाद
(शिर्डी)



श्री मुकेश प्रेमचंद जैन
(व्यालियर)

विशिष्ट संरक्षक



श्री दिल्मल चंद जैन
(बुढारी)



श्री पन्नालाल जैन
(इलाहाबाद)



इंजी. कैलाश जैन
(सागर)



डॉ. नारायण कोइराला
(भंगवाली)



डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन
(गाजियाबाद)



डॉ. भगवन्द भास्कर
(नागपुर)



श्री सी. बालाल जैन
(खड़ी)



श्री भगवन्द जैन
(निवारी)



श्री महेन्द्र सिंहवी
(पड़वार वाले, यागर)



श्री अमर कुमारजी
(जैतहरी)



श्री संतोषजी
(ग्रनेलगढ़)



इंजी. बी.एल. जैन-सोनेहलता जैन
(मुरुला)



श्री रुपेश सिंहवी
(लाईब तहसीलदार, रहनी)



श्री सं.सि. भगत तहसीलदार जैन
(पूनावाले, टीकमगढ़)



एड. आलोक जैन
(कटनी)



स्व. सि. काल्यान-स्व. श्रीमती नन्हीदेवीजी
(बाकल वाले, सिलेरी)



श्री पन्नालालजी-श्रीमती अंगूरीबाई जैन
(ठोपी वाले, कटनी)



श्री प्रकाश पंटौरिया
(कटनी)



श्रीमती सुनीता जैन
(इदर)



श्री राकेश-श्रीमती सुनीता जैन
(कटनी)



श्री बसंत जैन (बड़वाली)
(वेहान नगर, सागर)

परिवाय पत्रिका 'संस्कार' के प्रकाशन पर चंद्रेश्या परिवार की ओर से
ठार्डिक शुभकामनाएँ..



प्रो. कृष्ण कुमार जैन



श्रीमती सरोज जैन



डॉ. दीपक जैन



श्रीमती दिव्या जैन



दिव्या जैन

— जहाँ सोना चमके विश्वास के साथ... —

चंद्रेश्या आभूषण

शिशु मंदिर रोड, कोतमा, जिला - अनूपपुर (म.प्र.) 484334

फोन - 07658-233726, 233796 मोबा - 9425174420, 9300005143

The advertisement features a woman in a traditional Indian sari, adorned with elaborate gold jewelry including a necklace,耳环, and bangles, standing on the left. To her right is a collection of gold jewelry pieces: a large ornate necklace, a pair of long dangling耳环, and a wide band ring. The background is a rich, dark fabric with a subtle swirling pattern.



NAKSHATRA
DIAMOND JEWELLERY